समकालीन साहित्य, संस्कृति,
कला और विचार का मासिक

# उत्तर प्रदेश

फरवरी–2024, वर्ष 49

₹ 15/-

# गौतम चटर्जी की एक कविता

## बाहर गीत है भीतर चुपचाप निर्वासन

तुम्हारी प्रतिकृति होना चाहा
देह की उम्र भर

पहले जाना तुम्हारा स्वभाव
एकमुखी
जैसे रुद्राक्ष
रिक्त
जैसे बांसुरी पर बने स्वर के रूपविन्यास
अरूप
जैसे श्वेत आकाश में उड़ता श्वेत गरुड़
आनंद
जैसे नदी के हृदय में गोधूलि सूर्य
स्पंदित
जैसे स्त्री का गहन मौनप्रेम
शांत
जैसे उषा की हवाओं में अपनी ही गोद में मुग्ध वृक्ष।
तुम्हारे स्वभाव ने
मुझे स्वभाव में रहना सिखाया
देह में अब नहीं।
जब तक देह है
तुम्हारा ही प्रत्यग्र,
बाहर गीत है तुम्हारा
भीतर
चुपचाप निर्वासन।

◆

पता : एन.–11/38, बी–रानीपुर,
मेहमूरगंज, वाराणसी–221010
मो. : 7052306296, 9795178699

# उत्तर प्रदेश

❑ वर्ष 49 ❑ अंक 60
❑ फरवरी, 2024

## अनुक्रम

**श्रद्धांजलि**

- दिलों की पद्मश्री कमला दीदी ❑ अनामिका श्रीवास्तव / 3

**प्रेमगाथा**

- लीडिया और चेखव की दास्तान–ए–मोहब्बत ❑ राजेंद्र राजन / 5

**कहानी**

- अनोखी हैं मिस....... ❑ रोचिका अरूण शर्मा / 12
- ''मनैया'' ❑ डॉ. प्रीति गुप्ता / 16
- शाम ढल रही है ❑ सविता दास / 22

**कविताएँ**

- गौतम चटर्जी की एक कविता ❑ आवरण–2
- प्रीति गुप्ता की दो कविताएँ ❑ आवरण–3
- रीतादास राम की दो कविताएँ / 27

**पुस्तक समीक्षा**

- जीवन एक बहती धारा ❑ जसविन्दर कौर बिन्द्रा / 29

---

संरक्षक एवं मार्गदर्शक : ❑ **संजय प्रसाद**
प्रमुख सचिव, सूचना

प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी : ❑ **शिशिर**
सूचना निदेशक, उत्तर प्रदेश

सम्पादकीय परामर्श : ❑ **अंशुमान राम त्रिपाठी**
अपर निदेशक, सूचना
❑ **डॉ. मधु ताम्बे**
उपनिदेशक, सूचना
❑ **डॉ. जितेन्द्र प्रताप सिंह**
सहा. निदेशक, सूचना

अतिथि सम्पादक : ❑ **कुमकुम शर्मा**

उपसम्पादक, सूचना : ❑ **दिनेश कुमार गुप्ता**

आवरण : **अन्तरिक्ष**

भीतरी रेखांकन : **रीतिका**

सम्पादकीय संपर्क : सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, पं. दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ
मो. : 8960000962
ईमेल : upmasik@gmail.com

दूरभाष : कार्यालय : ई.पी.ए.बी.एक्स 0522–2239132–33, 2236198, 2239011

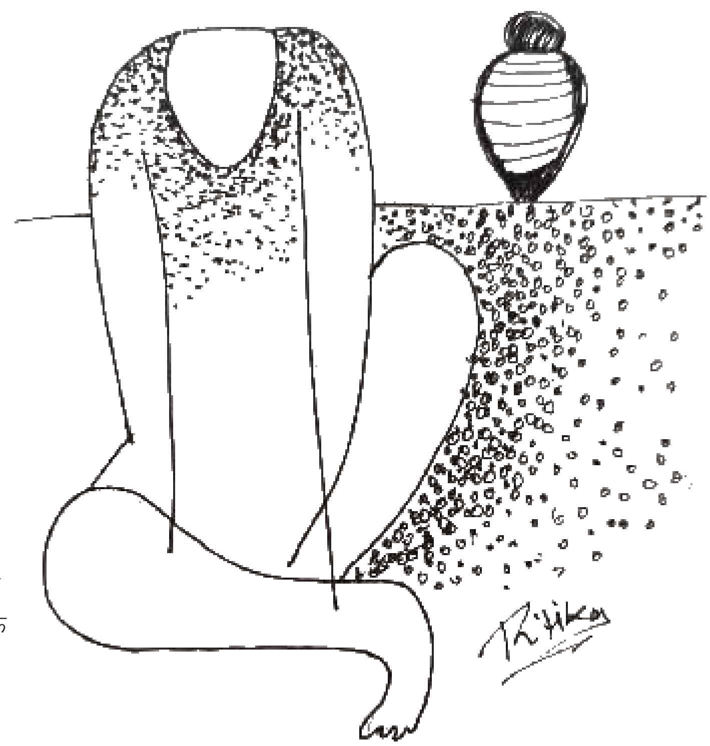

---

**पत्रिका information.up.nic.in वेबसाइट पर उपलब्ध है।**

❑ **एक प्रति का मूल्य** : पंद्रह रुपये
❑ **वार्षिक सदस्यता** : एक सौ अस्सी रुपये
❑ **द्विवार्षिक सदस्यता** : तीन सौ साठ रूपये
❑ **त्रैवार्षिक सदस्यता** : पांच सौ चालीस रुपये

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे मासिक पत्रिका 'उत्तर प्रदेश' और सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
–सम्पादक

# आवर्तन

## वशीकरण इक मंत्र है तजि दे वचन कठोर

यह समय ठहरकर सोचने समझने का है, अतीत से सीखने और वर्तमान में सतर्क होने का है ताकि ऐसी गलतियां न हों कि भविष्य हमसे जवाब मांगे और हम अनुत्तर हो जाएं। हवा की–सी तेजी से भागते समय और नित बदलते परिवेश ने हमें अधैर्यवान बनाया है, हर कोई समय के साथ भागने की होड़ में है। शब्दों पर नियंत्रण, भाषा में संयम और संस्कार महत्वपूर्ण है, किसी भी सभ्य और विकसित समाज के लिए। भाषा किसी भी संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह वह सूत्र है जिसके माध्यम से लोग एक दूसरे से संवाद करते हैं, रिश्ते बनाते हैं और कम्युनिटी शिप अर्थात् समुदाय की भावना को विकसित करते हैं। आज दुनिया में लगभग 6,500 भाषाएं बोली जाती हैं। ये सभी अपने–अपने स्तर पर अद्वितीय हैं।

संचार किसी भी समाज का मुख्य घटक होता है, और भाषा इसका महत्वपूर्ण पहलू है। जैसे–जैसे भाषा का विकास शुरू हुआ, विभिन्न सांस्कृतिक समुदायों ने ध्वनियों के माध्यम से सामूहिक समझ को एक साथ रखा। धीरे–धीरे परिवर्तित होते समय के साथ–साथ, ये ध्वनियाँ और इनके निहितार्थ आम हो गए और भाषा निर्मित हुई। अन्तर सांस्कृतिक संचार एक प्रतीकात्मक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा सामाजिक वास्तविकता का निर्माण, रख रखाव, मरम्मत और परिवर्तन किया जा सकता है। जब विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोग संवाद करते हैं, तो उनके सामने सबसे कठिन बाधाओं में से एक, भाषा की बाधा होती है। एक भाषा को अच्छी तरह से जानने वाला व्यक्ति स्वचालित रूप से उसी भाषा को बोलने वाले अन्य लोगों से पहचान बनाने में सक्षम हो जाता है। यह सम्बन्ध सांस्कृतिक आदान–प्रदान का एक हिस्सा है। एक से अधिक भाषाओं का ज्ञान व्यक्ति को अधिक से अधिक संस्कृतियों और साहित्य से जोड़ता है। क्योंकि सांस्कृतिक पहचान, जातीयता, लिंग, भौगोलिक स्थान, धर्म, भाषा और अनेक कारकों पर बहुत अधिक निर्भर करती है। संस्कृति के प्रतीकों अर्थों और मानदण्डों को ऐतिहासिक रूप से प्रसारित प्रणाली के रूप में परिभाषित किया गया है। सरल शब्दों में कहें तो संस्कृति अपने आप में एक भाषा है। यानी हम जब भी कुछ बोल रहे होते हैं तो हम अपनी संस्कृति और सभ्यता का प्रतिनिधित्व कर रहे होते हैं। तभी तो तुलसीदास जी ने कहा है ''तुलसी मीठे वचन से, सुख उपजत चहुं ओर। वशीकरण इक मंत्र है, तजि दे वचन कठोर।'' और अंत में डॉ. हरिवंश राय बच्चन की एक सुप्रसिद्ध रचना–

जीवन की आपाधापी में कब वक्त मिला,
कुछ देर कहीं पर बैठ कभी यह सोच सकूं
जो किया, कहा, माना उसमें भला बुरा क्या।
जिस दिन मेरी चेतना जगी मैंने देखा
मैं खड़ा हुआ हूं दुनिया के इस मेले में
हर एक यहां पर एक भुलावे में भूला
हर एक लगा है, अपनी–अपनी दे–ले में,
कुछ देर रहा हक्का–बक्का, भौंचक्का–सा,
आ गया कहां, क्या करूँ कहां जाऊँ किस जगह?
फिर एक तरफ से आया ही तो धक्का–सा,
मैंने भी बहना शुरू किया उस रेले में
क्या बाहर की ठेला–पेली ही कुछ कम थी,
जो भीतर भी भावों का ऊहापोह मचा,
जो किया, उसी को करने की मजबूरी थी
जो कहा वही मन के अंदर से उबल चला,
जीवन की आपाधापी में कब वक्त मिला,
कुछ देर कहीं पर बैठ कभी यह सोच सकूँ
जो किया, कहा माना उसमें भला बुरा क्या।

**–डॉ हरिवंश बच्चन**

**कुमकुम शर्मा**

# दिलों की पद्‌मश्री कमला दीदी

❑ अनामिका श्रीवास्तव

9 दशकों का बहुत सुन्दर, सुरीला संगीतमय जीवन बिताने वाली कमला श्रीवास्तव यानि हम सब की कमला दीदी का सिर्फ अब शरीर हमारे बीच नहीं है 'गीत–वाटिका' के गीतों के महकते फूल आने वाले दशकों में भी हमारे बीच अपने यादगार सुरों से सुरभित रहेंगी।

कमला दीदी सस्ते और मँहगे होने की बातें तो कभी करती ही नहीं थी, फिर पैसों को अपने जीवन में कभी उन्होंने महत्व दिया ही नहीं हजारों शिष्य उनके पास पिछले 7 दशकों में पहुँचे और सभी पर उन्होंने अपना संगीतमय स्नेह भर–भर अँजुरी लुटाया और उनका संगीत ख़जाना हमेशा भरा रहा।

ये ही कोई 10–12 बरस पहले लंबी बीमारी, दिल के ऑपरेशन के बाद वे मुम्बई अपने बेटे के पास से लौटी थीं, कई महीने शायद कोमा में भी रही थीं। लौटीं तो पूरी जीवन्तता के साथ उस समय मैं लोकसंगीत विभाग देख रही थी। एक दिन उन्होंने फोन किया, बिटिया तुम लोकसंगीत देख रही हो.... हमें नहीं बुलाओगी। मैंने कहा दीदी मैं बस अभी एक–दो महीने से ही देख रही हूँ और मुझे जानकारी नहीं थी कि आप लखनऊ वापिस आ गई हैं। उन्होंने किसी लोकगीत की दो लाइनें गुनगुनाईं और अगले महीने वे आकाशवाणी में रिकार्डिंग के लिए उपस्थित थीं।

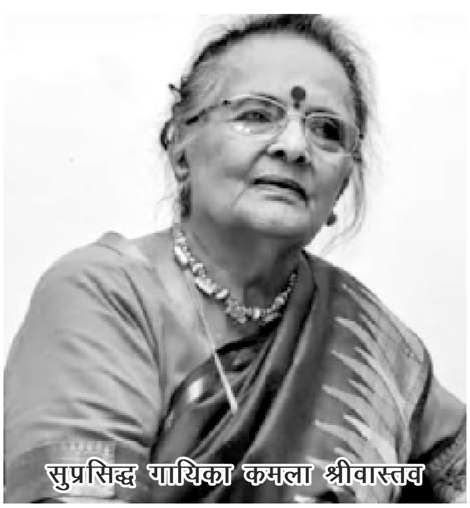

सुप्रसिद्ध गायिका कमला श्रीवास्तव

मैंने एक जूनियर कलाकार को उनके साथ रखा और वे स्टूडियो में गाने की तैयारी करने लगीं। जैसे ही मैं मीटिंग समाप्त होने के बाद उनके पास स्टूडियो पहुँती तो तपाक से बोलीं– अनामिका ''अब हम बहुत मँहगे हो गये हैं।'' मैंने थोड़ी हैरानी से कहा, दीदी अभी फीस नहीं बढ़ी है। अरे, हम फीस की बात कहाँ कर रहे हैं, बोलीं कमला दीदी। भई देखो 10–12 लाख का दिल, 5 लाख के घुटने, और कुछ और मिलाकर जो उन्होंने 18–20 लाख का एस्टीमेट बताया कि हम इतने मँहगे हो गए हैं– और स्टूडियों में हम सब ज़ोर से ठहाका मार कर हंस पड़े।

मैंने दीदी से कहा बस इतना मँहगा ही ठीक है अब और मँहगी मत होइएगा तो वह ठहाका लगाने लगीं, ये थी उनकी ज़िंदादिली उम्र की कोई सीमा नहीं, हर किसी से उतनी ही शालीनता और प्यार से मिलना और लुटाना संगीत के ख़जाने को।

शानदार खूबसूरत चमचमाती सिल्क की साड़ियाँ और सोने की मटरमाला, खूबसूरत कंगन, बालों का सँवारना अपने अंतिम समय तक शायद किसी ने कमला दीदी को कभी बेतरतीब बाहर निकलते नहीं देखा होगा और नयी जेनरेशन उनकी साड़ियों पर फिदा थी जब हम लोग कभी कहते, 'दीदी बहुत सुन्दर साड़ी है, अरे तुम ले लो' ये ही उनका जवाब होता था।

'लोक चौपाल' की 'चौपाल–चौधरी' कमला दीदी की लोक–संगीत की चौधराहट को चुनौती नहीं दी जा सकती वे अप्रतिम थीं। इलाहाबाद का सुगम, शास्त्रीय और लोकसंगीत का संगम उनकी रग–रग में बसा था।

कई संगीत प्रतियोगिताओं में उनके साथ जब जजों के पैनल में साथ रहने का मौका मिला तो संगीत की बारीक–से–बारीक समझ को उनसे सीखने का मौका मिला। किसी कलाकार में कितनी संभावनाएं हो सकती हैं, ये कमला दीदी को बहुत विस्तृत रूप से चर्चा करके तब अपना निर्णय देतीं।

आकाशवाणी के लोकसंगीत विशेषज्ञ राधावल्लभ चतुर्वेदी जी से उन्होंने लोकसंगीत की बारीकियों को सीखा और पिछले 6 दशकों से वे म्यूजिक कैंपोजर और गायक केवल कुमार जी से भी जुड़ी रहीं। उन्हें वे अपना छोटा भाई मानती थीं।

कमला दीदी की संवेदनशीलता अप्रतिम थी मुझे अपने तीन दशक के कैरियर में संगीत से जुड़ा कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जिसने कहा हो कि कमला श्रीवास्तव जी से किसी की अनबन हुई हो, ये उनकी बहुत बड़ी उपलब्धि थी।

हम सब लखनऊ वासियों के दिल में एक इच्छा थी कि आदरणीया कमला दीदी को पद्मश्री से सम्मानित किया जाये। और, कमला दीदी जैसी संगीत की साधिका के लिए यह कुछ अधिक भी न था। कमला दीदी की शिष्या मीतू मिश्रा कितनी शिद्दत से उनके डॉक्यूमेंट्स पूरा करवाने में जुटी हुई थी, ये किसी के लिये भी ईर्ष्या का विषय हो सकता है। उल्लेखनीय है कि मीतू मिश्रा की माँ नीरा मिश्रा भी उनकी शिष्या रहीं, इस तरह एक परिवार की दूसरी पीढ़ी भी उनसे जुड़ी रही।

पद्मश्री की उनकी अनुशंसा के लिए मीतू मुझे भी कई लोगों के पास लेकर गई। मीतू और उस जैसे शिष्यों का समर्पण सौभाग्यशालियों को ही मिलता है और कमला दीदी उनमें से एक हैं। स्व. आरती पांडेय लोक कलाकार की पुस्तक के विमोचन के अवसर पर कमला दीदी ने न केवल आरती पांडेय बल्कि लोकसंगीत से जुड़े अपने बड़े ही मज़ेदार संस्मरणों को साझा किया।

अमूमन, लोग कहते हैं कि स्त्रियाँ अपनी उम्र छिपाती हैं, पर मैंने जब से कमला दीदी को देखा तब से 90 तक वे अक्सर ठहाका मार के बताती थीं कि वे 80 की हैं, वे 90 की हैं ये थी उनकी जीवंतता।

यूँ तो जो भी कमला दीदी से मिला, उनके सम्पर्क में रहा वो यही सोचता रहा कि शायद वही उनके सबसे करीब है, वे थी हीं ऐसी। लेकिन 2017 दिसंबर की एक रात मेरे लिए सदा के लिए यादगार बन गई। मेरा स्थानान्तरण आकाशवाणी गोरखपुर हो गया था। मेरे जाने के 5–6 महीने बाद उनका फोन आया, रात्रि के 11 बजे थे मैंने, नमस्ते करके, पूछा क्या हुआ दीदी? अब मैं लखनऊ में नहीं हूँ, मैं गोरखपुर में पोस्टेड हूँ।

मैंने यह सोचते हुए बताया कि शायद कोई कार्य होगा, जिसके लिए उन्होंने फोन किया है। लेकिन यहां तो बात कुछ दूसरी ही थी, वे बोलीं ''तुम तो आकाशवाणी लखनऊ सूना करके चली गईं। वे फूट–फूट कर रोने लगीं। बोलीं, जब वहां जाती हूं, कोई तुम्हारी तरह कहां मिलता है? लगभग आधे घंटे तक हम फोन पर बतियाये दुनिया–जहान की बहुत सी बातें मां–बेटी की तरह करते रहे। फिर जब शनिवार को मैं लखनऊ आई तो उनसे मिलने भी गई। आज कमला दीदी जब नहीं हैं, तो मेरे दिल से भी एक आह निकल रही है कि कौन इतनी शिद्दत से पूछेगा कि तुम कहां हो और कहेगा कि उसे सूना लगता है।''

प्रोफेशनल जिंदगी में लोग मिलते हैं चले जाते हैं कौन इस भागती–दौड़ती ज़िंदगी में किसको याद रखता है। ऐहो जन्मी है बिटिया हमार सहेलियों सोहर गाओ...... जैसे सोहर प्रस्तुत करके कमला दीदी ने उस परम्परा में एक कड़ी और जोड़ दी कि सोहर सिर्फ बेटों के लिए नहीं बेटियों के लिए भी गाये जायेंगे। दस के कन्या–साठ के दूल्हा रामा कैसे सपुरि, कच्ची कली फूल मुरझाया हो रामा कैसे सपुरि। जैसे गीत बेहद लोकप्रिय हुए। अवधी, भोजपुरी और खड़ी बोली गीतों की उनकी पुस्तक गीतवाटिका पली बार 2009 में प्रकाशित हुई जिसकी भूमिका लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक' और 2014 में दूसरे संस्करण की भूमिका डा. शंभूनाथ जैसे साहित्यकारों ने लिखी। प्रो. कमला श्रीवास्तव एक सच्ची काव्यसाधिका हैं जिनके लोकगीतों में हृदय की अकृत्रिम संवेदना है और इसे व्यक्त करने के लिए सर, सरल और प्रवाहपूर्ण भाषा है जिसमें लयात्मकता और नाद सौन्दर्य है। नाद–ब्रहम के प्रति समर्पित सुर–साधिका कमला श्रीवास्तव जी ने विविधि स्वरलिपियों की संरचना करके गीतों के लय–प्रवाह के साथ जो नाद–सौंदर्य प्रस्तुत किया है, वह अत्यन्त सम्मोहक है।

'अवध के बसंत' को सूना करके चली गईं कमला दीदी, सचमुच आप बहुत मँहगी हो गईं। आपकी स्वर–लरियाँ आने वाली सदियों तक गुनगुनाई जायेंगी। ◆

**पता : सी–502 जॉय सिटीडेल अपार्टमेंट,**
**सतरिख रोड, लखनऊ**

# लीडिया और चेखव की दास्तान-ए-मोहब्बत

❑ राजेंद्र राजन

लीडिया एवीलोव। रूसी भाषा के महान लेखक चेखव की प्रेमिका। लीडिया ओर चेखव की प्रेम कहानी 130 साल बाद भी सच्ची होकर भी कल्पनाशीलता में ढली एक ऐसी दास्तान प्रतीत होती है जिसका मीठा सा एहसास साहित्य के किसी भी पाठक को पुलकित कर देता है। आखिर क्या है लीडिया की लव स्टोरी में जो 1889 से लेकर 1899 के बीच दस सालों में घटित होकर साल 1943 में लीडिया की मृत्यु के बाद दुनिया के सामने आ पाया। साल 1904 में चेखव की मृत्यु के उपरान्त लीडिया को यह कतई गंवारा नहीं था कि उसके जीते जी चेखव और उसके दरम्यान प्रस्फुटित प्रेम के अंकुर को दुनिया चटखारे लेकर पढ़े या जाने। वह चेखव के साथ अपने भावनात्मक रिश्ते को पोशीदा रखने के हक में थी। चेखव के प्रति लीडिया की आसक्ति और उसकी स्मृतियों को परदे में छिपाये रखने की कवायद कामयाब न हो पायी। हालांकि जिस प्रकार रूस के ही दीगर महान लेखक दोस्तोव्यस्की के प्रेम प्रसंग दुनियाभर में लोकप्रिय हुए, चेखव के साथ लीडिया का रिश्ता एक ऐसे अलौकिक प्रेम का प्रतिफल था, जो इतिहास के पन्नों में शिद्दत से दर्ज़ नहीं हो पाया। ठीक वैसे जैसे दुनिया भर के महान लेखकों को किसी न किसी या एक से ज्यादा युवतियों के साथ प्रेम प्रसंगों के रूप में जोड़कर देखा जाता रहा है।

लीडिया जिन्हें चेखव ने प्रेम किया

लीडिया एवीलोव का जन्म 1864 में मास्को में हुआ था। वह चेखव से चार साल छोटी थी। यानी चेखव का जन्म 1860 में हुआ था और वे महज 44 साल की उम्र में दुनिया से विदा हो गये थे। साल 1943 में 78 साल की आयु में लीडिया के निधन के चार साल बाद यानी 1947 में उनकी किताब छपी, 'चेखव इन माई लाइफ'। इस किताब में 10 साल तक चेखव के साथ उनकी कुल आठ मुलाकातों का ब्यौरा है। अंग्रेजी भाषा के लेखक डेविड मेगार्शक ने मूल रूप से रूसी भाषा में रचित 'मेरी जिन्दगी में चेखव' का अनुवाद अंग्रेजी में किया था।

लीडिया एविलोव पीटर्सबर्ग के एक अधिकारी की पत्नी थीं। एक लेखिका भी। चेखव जब लीडिया से पहली दफा मिले तो रूसी साहित्य के गलियारों और उस दौर के मीडिया में यह

चेखव

चर्चा आमफहम थी कि कम उम्र में ही लीडिया ने कहानियां लिखनी शुरू कर दी थीं। उनके चाहने वाले यह मान बैठे थे कि चेखव लंबी रेस का घोड़ा हैं और एक दिन वह पूरे विश्व के साहित्यिक पटल पर नक्षत्र की मानिन्द टिमटिमाने लगेगा। यही हुआ भी लेकिन कम ही लोग इस बात से वाकिफ रहे कि उनकी अधिकांश कहानियों में से कुछ ऐसी चुनिन्दा, बेमिसाल रचनाएं भी रहीं जिनकी रचना की पृष्ठभूमि में लीडिया की प्रेरणा लगातार बनी रही। उनका प्रेम–प्रसंग भले ही दुःखद और मर्मान्तक रहा हो, उसमें कुछ ऐसा अवश्य था जो चेखव को लिखने के लिये बार–बार बाध्य करता रहा। अक्सर कहा जाता है कि यातना अगर धनीभूत होगी तो सृजन के बीज वेदना की कोख से उसी से शिद्दत से प्रस्फुटित होंगे।

लीडिया से चेखव की पहली मुलाकात 24 जनवरी, 1889 को हुई थी। लीडिया की बहन के पति इसमें मददगार साबित हुए थे। सिर्गेई खुदेकोव 'पीटसबर्ग गजट' के मालिक और संपादक थे।

चेखव इस पत्रिका में 1885 से 1888 तक लगातार लिख रहे थे। बड़ी बहन नादया के साथ जब लीडिया पहली बार चेखव से मिलीं तो उसका परिचय उनके जीजा सिरगेयी ने कराया, 'आपकी हर कहानी लीडिया को याद है। और सैकड़ों तो इसने आपको ख़त लिख डाले होंगे। लेकिन यह कभी हां नहीं कहेगी।' चेखव स्टडी में चहलकदमी करते रहे। तुरन्त लीडिया से भेंट पर प्रतिक्रिया ज़ाहिर नहीं की। खाने की मेज से उठकर चेखव लीडिया के करीब आए और उसकी चोटी पकड़ कर बोले, 'ऐसी चोटियां तो मैंने पहले कभी नहीं देखीं।' वे उनकी बेतकल्लुफी से हैरान थीं। वे शायद लीडिया को अविवाहित ही समझ रहे थे।

सरगेयी ने चेखव को बताया, 'ये लिखती भी हैं। कहानियां लीडिया के भीतर कुछ है जरूर एक चिंगारी' विचार... इनकी हर कहानी में कुछ न कुछ होता जरूर है।'

लीडिया ने एक सपना देखा था— लेखिका बनने का 'कहानी और कविता तो बचपन में ही लिखने लगी थी अपनी संस्मरणात्मक किताब, 'मेरी ज़िन्दगी में चेखव लीडिया लिखती हैं, 'अपना लेखन मुझे जीवन में सबसे ज्यादा प्यारा था। मैं बहुत पढ़ाकू थी। चेखव मेरे प्रिय लेखकों में से थे। उनसे मिलना बातें करना, उन्हें अपनी करीब महसूस करना, मेरे लिये चमत्कार जैसा था।' मैं उनकी कहानी 'ग्रीफ' से बेहद अभिभूत थी। उनकी अनेक दूसरी कहानियों की ही तरह 'पीड़ा' कहानी भी मेरी बहन नादया के पति सिरगेयी के अखबार 'पीटरसबर्ग गजट' में छपी थी। 1904 में जब चेखव का देहावसान हुआ था, उसके कई सालों बाद तक इस कहानी का बूढ़ा कोचवान जोनाह मेरा पीछा करता रहा था।'

'जोनाह की कथा ने मुझे सचमुच कितना रूलाया था मुझे ही नहीं अपितु उन करोड़ों पाठकों को भी, दुनिया भर में, जिन्होंने चेखव की इस कहानी को पढ़ा होगा। इस कहानी में जोनाह को अपने इकलौते बेटे की मौत पर अपना दुःख बांटने के लिये उसे अपनी बूढ़ी घोड़ी के सिवा कोई दूसरा नहीं मिला। किसी को उसकी बात सुनने की फुर्सत नहीं थी। लेकिन फिर ऐसा क्या हुआ कि जब चेखव ने उसकी कथा लिखी तो सबने उसे पढ़ा। उसका दुःख अनुभव किया और कितनों को उसने रूलाया। यही तो है एक कथाकार की लेखनी का सर्वशक्तिमान जादू पहली ही मुलाकात में चेखव के व्यक्तित्व ने मुझ पर जादू सा कर डाला था। जरा सोचें, आप किसी महान लेखक की कहानियां लगातार पढ़ते आ रहे हो, उनके पात्र आपका पीछा करते आ रहे हों। और अकस्मात् एक रोज वो लेखक ठीक आपके सामने खड़ा

होकर आपसे बतियाने लगे तो क्या होगा ? 'मैंने देखा चेखव की आंखें कुछ सिकड़ी सी दिखती हैं, कड़कदार, सफेद कॉलर पट्टे की तरह गर्दन के गिर्द खड़ा हुआ और टाई भी बेतुकी सी थी।'

'खाने की मेज़ पर चेखव मेरी बगल में बैठे। सिरगेयी ने जब चेखव को मेरा परिचय एक लेखिका के रूप में दिया तो ना मालूम क्या सोचकर अपनी रचना प्रक्रिया पर टिप्पणी करने के बहाने कुछ ऐसा कह गये, जिसे सुनने के लिये नये लेखक ताउम्र तरसते से रहते हैं। चेखव मुस्कराते हुए मेरी ओर घूमे और अपना मन खोलने लगे, 'लेखक को वही लिखना चाहिए जो उसने देखा और भोगा है। मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि फलां–फलां कहानी के पीछे मेरा अभिप्राय क्या था ? ऐसे प्रश्नों के उत्तर में कभी नहीं देता। मेरा काम है लिखना। जीवन का अनुभव विचार को जन्म दे सकता है लेकिन विचार अनुभव को जन्म नहीं दे सकता। लेखक सिर्फ चहकने वाली चिड़िया नहीं है। फिर मैं कहां कहता हूं कि हर समय चहको। मैं अगर जिन्दा हूं सोचता हूं, लड़ता हूं, सहता हूं तो यह सब मेरे लेखन में झलकेगा ही। मैं जीवन को उसके यथार्थ रूप में कलात्मक दृष्टि से तुम्हारे सामने रखूंगा... और तुम वह सब देख पाओगे जो तुम्हें पहले नहीं दिखाई दिया था। उसकी तमाम विसंगतियां और असमानताएं...'

चेखव से पहली ही भेंट में मेरे भीतर प्रेम के अंकुर फूटने लगे थे। या फिर यह महज एक आसक्ति थी। 'लव एट फर्स्ट साइट।' सोचती हूं कभी–कभी किसी घटना के अर्थ को पूर्ण रूप से समझ पाना, बल्कि स्वयं उसे समझ पाना भी कितना दुष्कर होता है। और फिर वास्तव में घटा तो कुछ था भी नहीं। हमनें नजर भर एक दूसरे को देखा था... पर उस एक नज़र में क्या कुछ नहीं था। ऐसा लगा जैसे अन्तरमन में कुछ प्रस्फुटित हुआ– उमंग, उल्लास और आनन्द की जैसे हजार आतिशें जल उठी हों। इस अनुभव में मैं अकेली नहीं थी बल्कि चेखव भी मेरे साथ थे। हमने एक दूसरे को देखा चकित और प्रमुदित।

सन् 1892 में लीडिया की चेखव से दूसरी मुलाकात थी। मौका था 'पीटरसबर्ग गजट' अखबार की स्थापना की पच्चीसवीं सालगिरह। इधर–उधर की बेसिर पैर की बातों के बाद चेखव ने अपना मन खोला था, 'लीडिया एक बात बताओ। तीन साल पहले जब हम मिले थे तो तुम्हें लगा नहीं था कि हमारी जान–पहचान पुरानी है। हमने लम्बे बिछोह के बाद एक दूसरे को पाया है। हमारे दरमियान वे भावुक क्षण थे। प्यार का इज़हार करने के लिये हम दोनों तीन साल से प्रतीक्षारत थे। याद करो लीडिया पिछला जन्म। हम प्रेम में डूबे थे। हम युवा प्रेमी प्रेमिका थे। हमारी मृत्यु जहाज में डूबने से हुई थी।' मैं समझ गयी थी कि वार्तालाप के सूत्र को आगे बढ़ाने के वास्ते चेखव अपनी कल्पना के घोड़े दौड़ा रहे थे। लोग जाम टकराने के लिये आने लगे... चेखव उनसे मिलने के लिये उठे। आंखें झुकाए अपनी तारीफ सुनते रहे। फिर राहत की सांस लेकर बैठ गये। लीडिया ने छेड़ा, 'देख लिया मशहूर होने का अन्जाम। लोग अपने प्रिय लेखक के लिये कभी–कभी तो पागलपन की हदें पार कर लेते हैं।'

लीडिया ने सहसा विषयान्तर किया। वो चेखव से गॉलतावे, मास्को और मासिक पत्रिका 'रूसी विचार' के बारे में बात करने लगी। चेखव ने तीन साल पहले की अपनी राय दोहराई, 'ये पीटर्सबर्ग शहर मुझे सख़्त नापसन्द है। निहायत ही ठण्डा, बेजान–सा शहर... और तुम भी बहुत बुरी हो। मुझे कुछ भेजा क्यों नहीं तुमने। मैंने तुम्हारी कहानियां मांगी थीं।' लीडिया लिखती है, 'चेखव के खत में चोरी छिपे डाकघर जाकर लेती थी। डरती थी कहीं कोई खत मेरी गैर हाज़िरी में, बेमौका न पहुंच जाए। पर मिखाइल (मेरे पति) को इस बात की जानकारी थी कि हम एक दूसरे को ख़त लिखते हैं.।'

चेखव से लीडिया की वह तीसरी भेंट थी। अपनी बहन नादिया के घर। चेखव आए तो लीडिया ने कटाक्ष किया, 'आपने तो मना किया था कि कभी पीटर्सबर्ग नहीं आऊंगा।' 'चेखव ने उत्तर दिया मैं एक कमजोर और अनुशासनहीन हूं। ख़ैर। छोड़ो तुम बताओ ? क्या तुम परिवार में सुखी हो ?'

लीडिया बोली, 'मुझे लगता है जैसे मैं घिर गयी हूं और बाहर निकलने के सारे रास्ते बन्द हैं। कितनी पीड़ा, कितना कष्ट होता है यह सोचकर कि अब मैं लेखिका नहीं बन सकती। जो मिला है, उससे सन्तोष कर लूं। इन सबकी आदी हो जाऊं और अपने अस्तित्व को मिटा दूं...। चेखव उत्तेजित होकर बोले, स्त्रियाँ पराधीन हैं– परावलम्बी। हमें इस स्थिति का विरोध करना चाहिए... तुम अपने जीवन के बारे में क्यों नहीं लिखतीं। ईमानदारी और सच्चाई के साथ लिखो। इससे तुम्हारे साथ औरों का भी भला होगा। अपना अस्तित्व मिटाने की बात कभी मत सोचो। अपने भीतर छुपी प्रतिभा को, अपने व्यक्तित्व को पहचानों और उसका सम्मान करो। खुद पर अपने परिवार को हावी मत होने दो। जानती

हो अगर मैंने शादी की होती तो मैं अपनी पत्नी से अलग रहने के लिये कहता... ताकि ज्यादा समय साथ बिताने से आपसी व्यवहार में जो असावधानी या अशिष्टता का पुट आ जाता है वह हमारे बीच न आ पाए।'

चेखव पर शोध करने वाले लेखक मानते हैं कि जब वे लीडिया से मिले तब तक साहित्य के प्रति उनके लापरवाह रवैये में काफी बदलाव देखा जाने लगा था। बतौर लेखक वे अपने दायित्व के प्रति पूरी तरह सजग व जिम्मेदार हो चुके थे। वे अपनी कहानियों की तरफ ज्यादा वक्त दे रहे थे। साल 1886 में उनकी 115 कहानियां प्रकाशित हुई थीं। अगले साल यानी 1887 में केवल 65 और 1888 में सिर्फ 13 कहानियां छपीं थीं। ना मालूम किन वजहों से 1889 के बाद उन्होंने पीटर्सबर्ग से छपने वाले दो अखबारों में लिखना बन्द कर दिया था। दैनिक 'द पीटर्सबर्ग गजट' और साप्ताहिक पत्र 'फ्रैचमेन्टस' में। जीवन और मनुष्य के प्रति उनकी समझ विकसित हो चुकी थी। स्वाभाविक रूप से उनकी प्रेरणा स्त्रोत उनकी अंतरग प्रेमिका लीडिया एविलोव ही थी। वे वर्ड्सवर्थ से प्रभावित थे। वर्डसवर्थ मानते थे 'शान्ति के क्षणों में दोहराए गये मनोभाव' बेहतर साहित्य सृजन की ज़मीन तैयार करते हैं। इसलिये एक साक्षात्कार में चेखव ने अपना हृदय खोला था, 'मैं केवल स्मृति से ही लिख सकता हूं। सीधे प्रकृति से नहीं। मेरी कहानी के विषय के लिये मेरे मस्तिष्क की छननी से होकर गुजरना ज़रूरी है ताकि वही विचार रहे जो विशिष्ट और महत्वपूर्ण है।

गौरतलब है कि 1889 के शुरू में लीडिया से पहली मुलाकात और तीन साल बाद दूसरी भेंट के बीच चेखव मास्को और पीटर्सबर्ग से दूर एक गांव मेलिखोवो में अपनी जमीन के छोटे से टुकड़े पर दो कमरों की काटेज बनाकर रहने लगे थे। यहीं बैठकर वो तन्मयता से लिखा करते थे। चेखव उन नवोदित लेखकों की सहायता को भी तत्पर रहने लगे थे जो अपनी रचनाओं में सलाह और सुधार के लिए पांडुलिपियां उनके पास भेजा करते थे। इस परम्परा या दायित्व को उन्होंने ताउम्र कायम रखा। सारवालिन द्वीप में बसी कैदी बस्तियों के अध्ययन के लिये उन्होंने अपनी चर्चित यात्रा की और पहली बार फ्रांस और इटली गये। उनकी सेहत गिरने लगी थी। वे पेशे से डाक्टर थे। वे क्षय रोग से जूझ रहे थे। लेकिन अपने इस रोग को उन्होंने लम्बे वक्त तक स्वीकार नहीं किया था।

जनवरी, 1892 लीडिया एविलोव से दूसरी मुलाकात दुःखद थी। लीडिया के पति ज़ाहिर तौर पर अपनी पत्नी और चेखव के बीच बढ़ती भावनात्मक नज़दीकियों से ख़फा थे। वे नहीं चाहते थे कि उनके रिश्ते से लीडिया की बदनामी हो। हैरत की बात यह है कि लीडिया से पहली मुलाकात के पहले ही उन्होंने अपनी ज़िन्दगी की परेशानियों का ज़िक्र करते हुए एक अखबार के मालिक सुवोरिन को एक पत्र लिखा था जिसमें उन्होंने स्वयं के बारे में भविष्यवाणी की थी, 'बस अब मुझे एक दुःखद प्रेम प्रसंग की ही जरूरत है। 14 फरवरी, 1895 को लीडिया की एक और शायद तीसरी या चौथी भेंट का जिक्र स्वयं लीडिया ने अपने संस्मरणों की पुस्तक में किया है। 'मैं यह समझ चुकी थी कि जितना प्रेम चेखव को मुझसे है वैसा ही इन्तिहा प्यार मुझे भी उनसे है। मैंने प्रेम की राह पर कदम बढ़ाने और पीछे के सब दरवाज़े बन्द करने का फैसला लिया था। मैं तीन बच्चों की मां थी। परिवार को त्याग कर के चेखव से परिणय सूत्र में बंधने को तैयार थी। लेकिन लीडिया चेखव की सौ फीसदी स्वीकारोक्ति के प्रति आश्वस्त नहीं थी। अगर चेखव ने उसके बलिदान को स्वीकार नहीं किया तो कम से कम अपने पति, बच्चों के पास लौट सके। प्रेम में डूब जाने के बाद दोनों का यही हश्र होता है। व्यवहारिकता का विवेक खो जाता है। लीडिया अपने पति, तीन बच्चों और चेखव के बीच त्रिशंकु की तरह झूल रही थी। पति से जुदा होने के प्रस्ताव का जो तरीका लीडिया ने अपनाया वो अजब–गजब था। उसने चेखव की ही कहानी 'द नेबर्स' से पंक्तियां लीं। घड़ी की जंजीर के लिये एक पेडेन्ट खरीदा। उस पर गढ़वाया। लीडिया ने पेडेन्ट पर क्या गढ़वाया ?' अगर मेरी जान चाहो तो जाओ और ले लो।'

दूसरी ओर लीडिया के प्रति चेखव के नकारात्मक रवैये ने उनकी प्रेमिका को पीड़ा पहुंचाई। वो सौ फीसदी चेखव के लिये समर्पित थीं पर चेखव शायद एक प्रतिशत भी नहीं। दरअसल चेखव लीडिया और उसके तीन बच्चों के भरण पोषण की स्थिति में नहीं थे। उन्होंने लीडिया के प्रस्ताव का उत्तर तक देना मुनासिब नहीं समझा। यह तक नहीं बताया कि उन्हें लीडिया का पेडेट मिला भी या नहीं। उल्टे इस प्रसंग का इस्तेमाल अपने नाटक 'सी गल' यानी जलपाव में किया। इससे चेखव का कद लीडिया के समक्ष बौने रूप में प्रस्तुत होता है। वे भले ही सृजन के स्तर पर दुनिया जहान के नामचीन लेखक या कथाकार रहे हों, लेकिन उस औरत

के प्रति उनकी उपेक्षा जगज़ाहिर हो जाती है जो उनके प्रेम में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिये तैयार थी।

लीडिया को एक दफा चेखव ने कहा था, 'तीसवीं सालगिरह तक मैंने पूरी तरह निश्चित जीवन जिया है। मगर उसके बाद मैने खुद को ढेरों परेशानियों से घिरा हुआ पाया। मुझे लगता है अकेले के लिये संसार एक मरूस्थल के समान है।' तीस के बाद चेखव टूटते बिखरते चले गये। जीवन उन पर भारी पड़ता जा रहा था। चेखव जैसा असाधारण व्यक्तित्व इस जीवन से कभी भी सन्तुष्ट नहीं रह सकता था। और फिर लेखक के जीवन सुखों से ही भरा हो तो वह कैसे लिख सकता है। यौवन का ज्वार उतरते ही चेखव ने खुद को एक रेगिस्तान में निपट अकेला पाया ज्यादा गहरा और ठोस होता चला गया।

चेखव को तपेदिक जकड़ता जा रहा था। उन्हें खून की उल्टियां हो रही थीं। वे मास्को के एक अस्पताल में उपचाराधीन थे। एक दिन लीडिया उनका कुशलक्षेम पूछने आईं। फूलों का गुलदस्ता लेकर। नर्स ने लीडिया को डांटा, 'ये क्या कर रही है ? आपको जरा सी भी समझ नहीं है कि तपेदिक के मरीज के कमरे में फूलों की गन्ध...' कमरे में चेखव ने उसी कोमल, भरपूर नज़र से लीडिया का स्वागत किया। फूलों का गुच्छा दोनों हाथों से थामकर चेखव ने अपना चेहरा उसमें छुपा लिया।

'मेरे मनपसन्द फूल' उनकी आवाज महज एक फुसफुसाहट थी, 'गुलाब और लिली ... कितने खूबसूरत हैं ये।'

'पर आप इन्हें अपने कमरे में रख नहीं सकते।' नर्स ने टोका, 'डाक्टर इजाज़त नहीं देंगे।' 'मैं भी डाक्टर हूं।' चेखव बोले, 'इन फूलों को आप यहीं रहने दें और कृपया पानी में रख दें।'

फिर मार्च 28, 1887 को मास्को में अपने अस्पताल के कमरे से चेखव ने लीडिया को खत लिखा, '' तुम्हारे फूल मुरझाने की जगह और निखरते जाते हैं। मेरे डाक्टर साथियों ने उन्हें मेज पर रखने की इजाज़त दे दी है। तुम कितनी भली कितनी अच्छी हो। समझ नहीं पाता कैसे तुम्हारा शुक्रिया अदा करूं ईस्टर से पहले तो मुझे यहां से हिलने नहीं देंगे। यानि निकट भविष्य में तो पीटर्सबर्ग आने की सम्भावना नहीं है। मेरी तबीयत पहले से बेहतर है और खून भी कम आ रहा है... पर अभी बिस्तर पर ही पड़ा रहता हूं और यह खत भी लेटे–लेटे ही लिख रहा हूं। उम्मीद है तुम सकुशल होगी, विदा।' तुम्हारा चेखव।

रूस क्या दुनिया के महान लेखक लीयो टॉलसताय भी चेखव के मुरीद थे। रोग शैय्या पर जब चेखव लम्बे वक्त तक मास्को के अस्पताल में थे तो लीडिया ने ही टॉलस्टाय से आग्रह किया था कि वे चेखव से ज़रूर मिलें। उनका मन हल्का हो जाएगा। लेकिन उधर चेखव की टॉलस्टाय के साथ कई विषयों पर असहमतियां थीं। वे उनके धर्म सम्बन्धी विचारों से सहमत नहीं थे। वे उन्हें 'कुटिल बुद्धि बुढ़ऊ' कहते थे। बावजूद इसके टालस्टॉय उन्हें प्रिय थे। साल 1900 में टालस्टॉय गंभीर रूप से बीमार पड़े तो चेखव ने एक मित्र को लिखा, 'टालस्टॉय की मृत्यु से मैं डरता हूं, क्योंकि मेरे जीवन में वह एक खाली जगह छोड़ जायेगी। टालस्टॉय को प्राप्त सम्मान अभेद्य है। जब तक वे जीवित हैं साहित्य में फूहड़पन, कुरूचि, द्वेष खुलेआम सिर उठाने का साहस नहीं करेंगे। ये केवल उनका नैतिक प्रभाव है जो तथाकथित साहित्यिक माहौल और आन्दोलनों को एक निश्चित स्तर की ऊंचाई तक बनाए रखता है।'

टालस्टॉय चेखव के नाटकों के स्तर से खुश नहीं थे। उनके नाटकों को वे शेक्सपीयर के नाटकों से भी अधिक निकृष्ट मानते थे। इसी कारण चेखव ने एक साल तक कोई नया नाटक नहीं लिखा था। जब अस्पताल में टालस्टॉय चेखव से मिलने आए तो वे बेहद खुश हुए। लेकिन टालस्टॉय की बातें सुनकर वे उत्तेजित हो उठे थे। दरअसल टालस्टॉय को अपनी आयु से छोटे लेखक को उपदेश देने की आदत थी। रोग शैय्या पर लेटे चेखव को उनका भाषण नागवार गुजरा। यूं चेखव इस बात को लेकर प्रसन्न व अभिभूत थे कि दुनिया का महान लेखक उनका हालचाल पूछने आया था। पर एक रोगी, घनहीन लेखक की शैय्या के पास बैठ टालस्टॉय का उपदेश देना और आलोचना करना बिल्कुल बे–मौजूं था।

चेखव ने अपने जीवन में इतना कुछ झेला कि वे शायद कभी भी सामान्य या सहज नहीं रहे। बचपन में पिता के कठोर व्यवहार ने उनके भीतर एक द्वन्द्व पैदा किया। पिता उन्हें पीटते थे। पिता चेखव और अपने अन्य बच्चों को चर्च जाने के लिये विवश करते थे। ना नुकर करने पर उन्हें बेरहमी से पीटते। चेखव को किसी भी प्रकार की हिंसा बर्दाश्त नहीं थी। उन्होंने अपने पिता को इस बात के लिये

कभी माफ नहीं किया जिसके कारण चेखव को जबरन धार्मिक विश्वास थोपे जाने से नफरत हो गयी थी। दुकानदार पिता का दिवाला निकलने के बाद उन्हें सपरिवार अपने गांव से मास्को भागना पड़ा। तंगहाली में परिवार एक तहखाने में रहा, जब तक चेखव गुजारे लायक पैसा कमाने नहीं लगे। बचपन से ही उनके भीतर नितान्त एकाकीपन की भावना ने जन्म लिया जो उनकी घड़ी की जंजीर में लगी मुहर से स्पष्ट होती है जिस पर लिखा था, 'जो अकेले हैं, उनके लिये यह संसार रेगिस्तान है।'

लीडिया से चेखव की पहली मुलाकात 24 जनवरी, 1889 को पीटर्सबर्ग में हुई थी। तब उनके महान लेखकों की फेहरिस्त में शामिल होने की चर्चा शुरू हो चुकी थी। वे 29 साल के थे और उनके तीन कथा संकलन छप चुके थे। उन्हीं दिनों प्रख्यात रूसी लेखक ब्लादिमिर कोशेलेन्को ने चेखव के बारे में कहा था, 'चेखव की आंखें नीली, गहरी और चमकीली थीं। विचारमग्न और शिशुओं जैसी भोली। पहली ही मुलाकात में मुझे चेखव मुझे एक ऐसे व्यक्ति लगे जो अपने जीवन को भरपूर जी रहा हो। व्यक्तित्व में कुछ ऐसी मोहिनी थी जिससे आप अछूते नहीं रह सकते। यह बात अचरज में डालती है कि चेखव को मास्को, पीटर्सबर्ग या फिर रूस के किसी भी बड़े शहर की चकाचौंध छू नहीं पाई। वे ताउम्र अपनी जड़ों से जुड़े रहे। समाज के प्रति अपने सरोकारों और प्रतिबद्ध रवैये से वे लाखों, करोड़ों चाहने वालों के दिलों में उतर गये। कड़े संघर्ष के बाद उन्होंने अपनी मेडिकल की पढ़ाई पूरी की और डाक्टर बने। मेलीखोवो में अपने घर के आसपास गांव देहात में मुफ्त चिकित्सा जारी रखी। किसानों में शिक्षा को बढ़ावा देने में रूचि लेते रहे। हैरत की बात है कि आय के बेहद सीमित साधनों के बावजूद चेखव ने अपने गांव में एक अस्पताल बनवाया। तीन स्कूल खोले । अपने शहर 'तागानरोग' में एक सार्वजनिक पुस्तकालय खोला। मरते दम तक इस लाइब्रेरी के लिये वे पुस्तकें उपलब्ध करवाते रहे।

**चेखव ने अपने जीवन में इतना कुछ झेला कि वे शायद कभी भी सामान्य या सहज नहीं रहे। बचपन में पिता के कठोर व्यवहार ने उनके भीतर एक द्वन्द पैदा किया। पिता उन्हें पीटते थे। पिता चेखव और अपने अन्य बच्चों को चर्च जाने के लिये विवश करते थे। ना नुकर करने पर उन्हें बेरहमी से पीटते। चेखव को किसी भी प्रकार की हिंसा बर्दाश्त नहीं थी। उन्होंने अपने पिता को इस बात के लिये कभी माफ नहीं** **किया जिसके कारण चेखव को जबरन धार्मिक विश्वास थोपे जाने से नफरत हो गयी थी। दुकानदार पिता का दिवाला निकलने के बाद उन्हें सपरिवार अपने गांव से मास्को भागना पड़ा। तंगहाली में परिवार एक तहखाने में रहा, जब तक चेखव गुजारे लायक पैसा कमाने नहीं लगे। बचपन से ही उनके भीतर नितान्त एकाकीपन की भावना ने जन्म लिया जो उनकी घड़ी की जंजीर में लगी मुहर से स्पष्ट होती है जिस पर लिखा था, 'जो अकेले हैं, उनके लिये यह संसार रेगिस्तान है।'**

चेखव का 'सी गल' नाटक निश्चित रूप से लीडिया की अन्तरंगता से प्रेरित था। अक्तूबर 29, 1896 के रोज पीटर्सबर्ग के अलेक्जेन्ड्रिस्की थिएटर में 'सी गल' का मंचन हुआ था। इसकी असफलता और चेखव के इस शहर से पलायन के पीछे कई बातें थीं। लीडिया को इस घटनाक्रम से गहरा सदमा लगा था। पीटर्सबर्ग के लेखकों का चेखव के प्रति ईर्ष्या भाव एक बड़ी वजह बताई गयी। अदब बिरादरी इस बात को लेकर खफा थे कि चेखव ने कम उम्र में ही साहित्य में लोकप्रियता हासिल कर ली थी जबकि बहुत से लेखक रूस में उनकी अपेक्षा अधिक संघर्षशील बने हुए थे। मार्च 1897 में चेखव के एक और नाटक 'अंकल वान्या' का प्रकाशन हुआ था। उनके आख़िरी दोनों नाटक–'द थ्री सिस्टर' और 'द चेरी आर्चड' आने बाकी थे।

लीडिया और चेखव की आख़िरी मुलाकात मई 1899 में हुई थी। पहली मुलाकात के दस साल बाद। मास्को रेलवे स्टेशन पर। चेखव ने प्रस्ताव रखा, 'आज शाम मेरे लिये 'जलपाखी' का विशेष प्रदर्शन किया जा रहा है जिसमें कोई अन्य दर्शक न होगा। तुम आज भर रूक जाओ। ठीक है ? लीडिया ने कोई उत्तर नहीं दिया। वो बच्चों के साथ अपनी गर्वनेस के साथ मास्को में रूक नहीं सकती थी। सब प्लेटफार्म पर अपनी गाड़ी के कम्पार्टमेन्ट में पहुंच रहे थे। चेखव भावुकता के उत्कर्ष पर थे। 'क्या तुम्हें कुछ ध्यान है हमारी पहली मुलाकात को दस साल हो गए हैं। हां, दस साल। हम कितने युवा थे तब।' उस रोज मास्को में एक रात

अपने बच्चों के साथ न रूक पाने की वजह से चेखव लीडिया से खासे नाराज थे। मगर यह शायद उनकी कोरी भावुकता थी। वे कतई व्यवहारिक नहीं थे। लीडिया ने लिखा, 'बसन्त की उस सर्द रात बागीचे में चांद खिला था। आसपास चुप्पी छा जाती तो दूर कहीं से बुलबुल के गाने का स्पष्ट स्वर हवा में तैरता आता। अपने कमरे की बालकनी में, गर्म शॉल में लिपटी मैं दूर टकटकी लगाए खड़ी थी। जहां पेड़ों की फुनगी के ऊपर टिमटिमाते तारे आकाश भर में छिटके थे।'

फरवरी 14, 1899 को चेखव ने लीडिया को आख़िरी ख़त लिखा, 'प्रिय लीडिया अलेवसेयिवना। आशा है विभिन्न लेखकों की कहानियों का संकलन निकालने का विचार तुमने छोड़ दिया होगा। ये थकान भरा काम है... सदा खुश रहो और जीवन को बहुत गंभीरता से न लो। शायद वह कहीं अधिक सहज है... और फिर जिस जीवन से हम परिचित नहीं, क्या वह इस योग्य है कि उसके लिये इतनी मानसिक यन्त्रणा भोगी जाए ? सदा सुखी और स्वस्थ रहो। तुम्हारा अपना चेखव। लीडिया को लगा जैसे चेखव पलटकर एक नज़र अपने जीवन को देख रहे हैं... होठों पर कसैली मुस्कान लिए... 'लीडिया ने दूसरी बार पहली बार अस्पताल में जब उन्होंने एक दिन और मास्को में रहने की बात ठुकरा दी थी और अब रेलवे स्टेशन पर चेखव का ऐसा अनुरोध अस्वीकार कर दिया था जो उनके लिये बहुत मायने रखता था। 'मेरी ज़िन्दगी में चेखव' पुस्तक को मूलरूप से लीडिया ने रूसी भाषा में लिखा था। उसका अंग्रेजी अनुवाद में डेविड मैगा ने किया था ? वे लिखते हैं, 'दोनों ही मौकों पर अपने अस्वीकार के जो कारण लीडिया ने दिए उनमें कोई वजन नहीं है। परन्तु बतौर लेखक चेखव ने जो आदर्श वाक्य अपना रखा था उसके वे सर्वथा अनुरूप थे, 'जैसा भी है जीवन वही है। और स्वयं चेखव की कोई रचना इतनी दारुणं पीड़ा से भरी नहीं है जितनी उसी स्त्री से उनकी यह आख़िरी मुलाकात, जिसने अधिकांश लेखकीय जीवन के दौरान उनकी भावनाओं पर इतना गहरा प्रभाव डाला था।'

अंग्रेजी से हिन्दी में लीडिया एविलोव की संस्मरणात्मक किताब, 'चेखव इन माई लाइफ' को लाने का श्रेय राजेन्द्र यादव को है । 28 अगस्त, 2004 को इस पुस्तक की संक्षिप्त भूमिका में यादव जी लिखते हैं, 'कलकत्ते के ग्रांड होटल के नीचे किताबों की एक छोटी सी दुकान थी। किताबें वहां चुनी हुई मिलती थीं। वहीं यह किताब मिली। पुरानी किताबों के ढेर में। यदि इसमें चेखव और लीडिया का नाम न भी होता तो भी अपने आप में यह बेहद संवेदनशील अन्तरंग प्रेम कहानी थी। लीडिया चेखव की प्रेमिका थी और उसकी इच्छा थी कि किताब उसके मरने के बाद ही छपे। बाद में शायद लीडिया के परिवार वालों की ओर से कुछ ऐसा हुआ कि किताब को सर्कुलेशन और बिक्री से वापिस लेना पड़ा। अब यह प्रेम कहानी दुनिया के किसी भी देश या भाषा में कहीं भी उपलब्ध नहीं है। इस पुस्तक की कहानी इस कदर जीवन्त है कि स्वयं ही न जाने कहां–कहां के चक्कर लगाने के बाद बफादार कबूतर की तरह वापस मेरे पास आती रही है। नामवर सिंह सबसे बड़े 'पुस्तकमार' के रूप में प्रसिद्ध हैं। किसी तरह यह पुस्तक उनके यहां से लौटी तो इसे धर्मवीर भारती, रघुवीर सहाय, अज्ञेय, अशोक वाजपेयी, केदारनाथ सिंह, अर्चना वर्मा और न जाने किस किस ने उधार लेकर पढ़ा। मुझे इस बात के लिये शाबाशी दी जानी चाहिए कि मैंने इसे हर लेखक से वापस प्राप्त कर लिया। दर्जनों मित्रों ने इसकी फोटोस्टेट कराई। ऐसा प्रतीत होता है कि कलकत्ता में पुरानी किताबों के कबाड़ से यह दुर्लभ पुस्तक राजेन्द्र यादव ने नब्बे के दशक में खरीदी थी। कई साल तक कई लेखकों के हाथों से गुजरने के बाद यह किताब फिर खुशकिस्मती से यादव के पास लौट आई थी। बहरहाल, आज से करीब 20 साल पहने यानी 2003 में राजेन्द्र यादव ने इस पुस्तक को रंजना श्रीवास्तव को सौंपा। वे रचनात्मक अनुवादों के लिये एक प्रज़्यात नाम है। साल 2005 में 'मेरी जिन्दगी में चेखव' नाम से लीडिया एविलोव की मूल अंग्रेजी किताब का हिन्दी संस्करण राजकल से छपा। रंजना का अनुवाद इस कदर सटीक, सशक्त और स्वाभाविक सा है कि ऐसा आभास पैदा होता है कि लीडिया ने मानों यह किताब हिन्दी में ही लिखी हो। कुछ भी हो लीडिया और चेखव का वह अलौकिक प्रेम इतिहास के पन्नों में दर्ज है। ऐसी कहानियां हर देश, काल में घटित हुई हैं, होती रहेंगी और पाठकों को गुदगुदाती रहेंगी। ◆

**पता : गांव–बल्ह डा. मौहीं, तहसील**
**व जिला हमीरपुर**
**मो. : 8219158269, 9418020610**

# अनोखी हैं मिस ..............

❑ रोचिका अरूण शर्मा

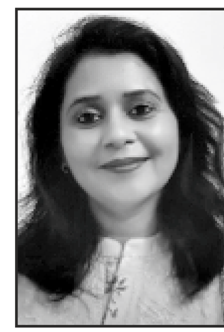

शिमला से आगे पहाड़ों की ऊँचाई पर चढ़ते हुए गाँव की पगडंडियों सी सड़कों पर इनोवा में बैठे सिरीश व उसका परिवार सुरम्य वादियों का नज़ारा करते हुए चिट्‌कुल पहुँचे। यह देश की तिब्बत सीमा पर लगा आख़िरी गाँव है। सभी ठंड से कंपकंपाते हुए अपने टेंट में गए और यहाँ रात को कैम्पिंग की। जब आँख खुली तो पीली गुनगुनी धूप की रौशनी में नहाया सवेरा और सामने बहती कलकल करती नदी का झक्क सफेद पानी अपनी ओर आकर्षित कर रहा था।

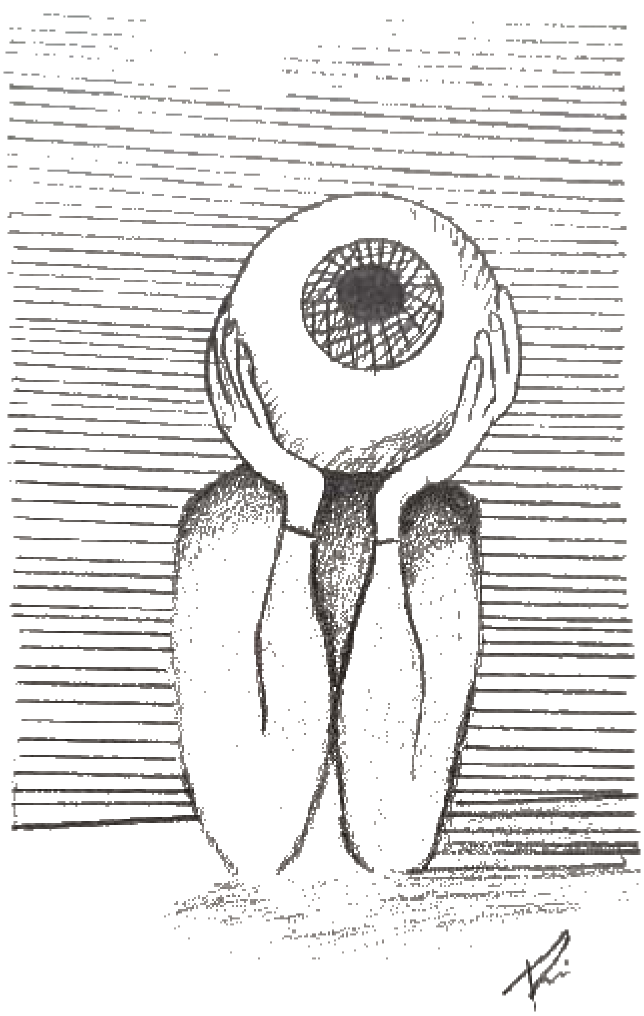

अगले दिन वे निकल पड़े थे नाको और फिर वहाँ से काज़ा के लिए। रास्ते में मरुस्थल से दिखाई पड़ते काले–भूरे रेतीले–पथरीले पहाड़, खाई में नीचे बहती सुन्दर कहीं हरी तो कहीं सफेद और कहीं–कहीं मटमैली नदियाँ इस यात्रा की हमसफर थीं। शाम के करीब पाँच बजे वे स्पीती वैलीके गाँव काज़ा पहुँचे। सामने के मरुस्थल से दिखने वाले पहाड़ की चोटी पर ढलती धूप पहाड़ को सुनहरी कर रही थी। दूसरी तरफ का काला पथरीला पहाड़ कहीं–कहीं बर्फ से ढँके होने के कारण ऐसा दिखाई पड़ रहा था मानो प्रकृति ने अपने सौंदर्य को निखारने हेतु सिल्वर स्ट्रीक्स करवाए हों। "द काइंड मोंक" वैसे इस जगह को होटल नहीं कहना चाहिए यह होटल कम होम स्टे ज्यादा था। कुल आठ कमरे इसमें रहने के लिए थे और एक बड़ा–सा डायनिंग हॉल जो इस घर का ड्राइंग रूम और डायनिंग दोनों ही था। वे अन्दर जा कर सोफे पर बैठे ही थे कि बेटी शैफाली ने सिर दर्द होने की शिकायत की। उसका बुझा हुआ–सा चेहरा देखते ही रिया समझ गयी थी कि उसकी तबीयत कुछ ठीक नहीं। उसका जी घबरा रहा था और उलटी जैसी हरारत हो रही थी।

रिसेप्शन पर कोई नहीं था। नीलेश ने दिए गए नंबर पर फोन किया लेकिन फोन भी कोई नहीं उठा रहा था। ऐसे में रिया ने वहाँ आस–पास एक चक्कर लगाया और वाशरूम ढूँढ लिया। सुनो शैफाली यहाँ वाशरूम है यदि उलटी जैसा महसूस हो तो झट से इसमें जाना।

तभी एक पहाड़ी नाक–नक्श वाली महिला वैसे ही दिखने वाले एक युवा के साथ वहाँ पहुँची। युवा ने सब्जियों के थैले उठाये हुए थे। महिला ने नीलेश से बात की और उनका सामान दूसरी मंजिल पर बने कमरे में रखवा दिया गया। नीलेश भी जरूरी कार्यवाही कर सपरिवार कमरे में पहुँच गया था। कमरे के बाहर बारामदे में सोफे लगे हुए थे। वहाँ उनके लिए चाय आ गयी थी। अभी वे चाय पी ही रहे थे कि शैफाली ने उलटी की। बाथरूम का वाश–बेसिन ब्लॉक हो गया था। नीलेश ने रिसेप्शन में पुनः फोन किया लेकिन फोन किसी ने उठाया नहीं। सो वह स्वयं नीचे गया और वहाँ उस महिला को बोल कर सफाई करवाई। कुछ ही देर में वह महिला ऊपर आयी। हाथ में प्लास्टिक के दो बड़े डिब्बे थे। रिया से बात करते हुए वह बोली ”बिटिया को डॉक्टर को दिखाना पड़ेगा आप लोग पीछे से खाते–पीते  हुए आ रहे हैं न इसलिए इन–डाइजेशन हो गया है।“

**तभी एक पहाड़ी नाक–नक्श वाली महिला वैसे ही दिखने वाले एक युवा के साथ वहाँ पहुँची। युवा ने सब्जियों के थैले उठाये हुए थे। महिला ने नीलेश से बात की और उनका सामान दूसरी मंजिल पर बने कमरे में रखवा दिया गया। नीलेश भी जरूरी कार्यवाही कर सपरिवार कमरे में पहुँच गया था। कमरे के बाहर बारामदे में सोफे लगे हुए थे। वहाँ उनके लिए चाय आ गयी थी। अभी वे चाय पी ही रहे थे कि शैफाली ने उलटी की। बाथरूम का वाश–बेसिन ब्लॉक हो गया था। नीलेश ने रिसेप्शन में पुनः फोन किया लेकिन फोन किसी ने उठाया नहीं। सो वह स्वयं नीचे गया और वहाँ उस महिला को बोल कर सफाई करवाई। कुछ ही देर में वह महिला ऊपर आयी। हाथ में प्लास्टिक के दो बड़े डिब्बे थे। रिया से बात करते हुए वह बोली ”बिटिया को डॉक्टर को दिखाना पड़ेगा आप लोग पीछे से खाते–पीते  हुए आ रहे हैं न इसलिए इन–डाइजेशन हो गया है।“**

रिया ने उसकी बात को कोई खास तूल नहीं दिया क्योंकि शैफाली को सर दर्द के साथ उलटी पहले भी कई बार हो चुकी थी। अक्सर नींद की कमी और थकान से ऐसा होता था।

”आपको और चाय दे दूँ ?“ उस महिला ने पुनः रिया के साथ बातचीत आगे बढाई। रिया अनमनी सी ज्यादा कुछ न बोलते हुए सिर्फ उस महिला के चेहरे को पढ़ने की कोशिश करती रही और उसकी बात सुनती रही।

”यह मेरा नंबर आप सेव कर लीजिये कोई परेशानी हो तो आप मुझे फोन कर दीजिये“ जब वह चली गयी तो रिया ने नीलेश से पूछा ”यह कौन हैं“ शायद यही मालकिन है इस जगह की नाम बताया ”कायरा“ तभी वह कह रही हैं कि आप पीछे से खाते–पीते आये हैं न इसीलिए बेटी को अपच की समस्या हुई है।

हम्म, हो सकता है लेकिन मुझे यह अल्टियूड सिकनेस लग रही है। देखते हैं थोड़ी देर यदि फिर से उलटी हुई तो डॉक्टर के पास लेकर जाना ही होगा। अभी पंद्रह मिनट बीते कि शैफाली फिर से वाशरूम में थी। जैसे ही वह बाहर आयी नीलेश उसे डॉक्टर को दिखाने के लिए ले गया। डॉक्टर ने जरूरी जाँच कर उसे दवाइयां दे दीं साथ में ओ आर एस का पाउडर भी।

रात भर शैफाली उलटियाँ करती रही, न तो दवा पेट में रुकती और न ही ओ. आर.एस.। सवेरे रिया जैसे ही जागी नीलेश के पास दूसरे कमरे में गयी।

”अमन को भी लूज मोशंस हुआ है, अब दोनों को ही डॉक्टर के पास लेकर पुनः जाना होगा“ नीलेश ने फिक्र जताई। बगैर नहाए दोनों बच्चे तैयार थे और नीलेश, रिया  उन्हें पास ही के हॉस्पिटल में ले गए। वहाँ जाते ही नर्स ने उनका चेकअप किया। डॉक्टर से सलाह–मशवरा किया और उन्हें वही एडमिट कर लिया गया। देखने में ठीक–ठाक सा यह सरकारी अस्पताल दिखाई पड़ रहा था।

”शरीर में पानी भी नहीं रुक रहा है इसलिए इन्हें ड्रिप चढ़ानी होगी वरना डी–हायड्रेशन हो जाएगा।“ पास के पलंगों पर कुछ मरीजों को ऑक्सीजन भी दी जा रही थी। रिया को मन ही मन डर–सा लगने लगा था। बेटे को ड्रिप

लगाई तो ठीक तरह से लगी नहीं। उसके हाथ से खून ज़मीन पर बह गया था सो रिया ने भाग कर नर्स को बुलाया। घबराहट बढ़ती जा रही थी। नर्स ने पुनः ड्रिप लगाई और ध्यान रखने को कह वहां से चली गयी। दोनों पति–पत्नी के चेहरों पर फिक्र की रेखाएं गहरा गयी थीं। नीलेश तो पलंग पर अपना माथा टिकाए निढाल सा बैठा था। रिया अपने बेटे के पास बैठी उसकी पीठ पर हाथ फिरा रही थी।

ठंड में बच्चे कम्बल में भी काँप रहे थे। नर्स ने बताया कि रात को पहाड़ों पर बर्फ पड़ी थी इसीलिए ठंड बढ़ गयी थी एवं पहाड़ों की चोटी पर धुंध सी दिखाई पड़ रही थी। रिया ने उन्हें जैकेट्स भी ओढ़ा दिए। डॉक्टर भी राउंड पर आ गए थे। ”देखिये आप लोग प्लेन्स में रहने वाले हैं न इसलिए पहाड़ों पर आपको ऑक्सीजन की कमी महसूस होती है। जिसके चलते सर में दर्द एवं अपच हो जाती है। साधारण तौर पर जो भी यहाँ मैदानी स्थानों से आते हैं उन्हें ऐसा होता ही है। अभी हम इन्हें ऑब्जरवेशन में रखेंगे। इसलिए आप इनके नाश्ते का इंतजाम यहीं कर दीजिये। खाने के बाद इनकी क्या स्थिति रहती है देखना होगा।” डॉक्टर बता कर वहाँ से चले गए थे।

**ठंड में बच्चे कम्बल में भी काँप रहे थे। नर्स ने बताया कि रात को पहाड़ों पर बर्फ पड़ी थी इसीलिए ठंड बढ़ गयी थी एवं पहाड़ों की चोटी पर धुंध सी दिखाई पड़ रही थी। रिया ने उन्हें जैकेट्स भी ओढ़ा दिए। डॉक्टर भी राउंड पर आ गए थे। ”देखिये आप लोग प्लेन्स में रहने वाले हैं न इसलिए पहाड़ों पर आपको ऑक्सीजन की कमी महसूस होती है। जिसके चलते सर में दर्द एवं अपच हो जाती है। साधारण तौर पर जो भी यहाँ मैदानी स्थानों से आते हैं उन्हें ऐसा होता ही है। अभी हम इन्हें ऑब्जरवेशन में रखेंगे। इसलिए आप इनके नाश्ते का इंतजाम यहीं कर दीजिये। खाने के बाद इनकी क्या स्थिति रहती है देखना होगा।” डॉक्टर बता कर वहाँ से चले गए थे।**

रिया ड्रायवर के साथ ”द काइंड मॉक” पहुँची और डायनिंग हॉल में जा कर उसने नाश्ता पैक करने के लिए रिक्वेस्ट किया। तभी मिस कायरा वहाँ आ पहुँचीं। कैसी है तबीयत दोनों बच्चों की ?

रिया ने उन्हें हाल–चाल बताये और मिस कायरा ने रिया का नाश्ता लगवा दिया। बोलीं टिफिन पैक हो तब तक आप यहीं खा लीजिये। रिया ने इसी में समझदारी समझी। मिस कायरा चाय लेकर हाज़िर थीं। स्वादिष्ट पोहा और गर्म चाय सुबह से भूखे पेट को ऊर्जा दे रहे थे।

रिया को आदत थी कि नाश्ते के साथ–साथ चाय की चुस्कियाँ लेती। ठंड के चलते शायद वह चाय के बड़े घूँट ले रही थी। इसीलिए उसका कप खाली होने को था तभी मिस कायरा थर्मस में चाय लेकर हाज़िर थीं।

”और चाय ले लीजिये आप, अभी ही बनायी है” रिया ने हामी में गर्दन हिला दी। मन ही मन सोचा ”इतना ख्याल कौन रखता है भला, कल रात भी मिस कायरा ने खाना कितना मनुहार कर खिलाया था। पनीर की सब्जी खास तौर पर हम शाकाहारी लोगों के लिए बनवाई थी।”

रिया वहां से रवाना तो हो गयी लेकिन मन में मिस कायरा का आतिथ्य घर कर गया। ”यह महिला है कि मशीन, कितना काम करती हैं। सबसे बड़ी बात तो यह कि हर एक गेस्ट को पूछ–पूछ कर खाना खिलाना, साफ–सफाई भी बहुत अच्छी है इस जगह की। खैर पाँच मिनट में वह हॉस्पिटल पहुँच गयी थी। नीलेश व बच्चों को गर्म चाय और पोहा दिया। करीब एक घंटा वहाँ रुके उसी बीच एक अन्य नर्स आयी और बोली ”आज आपके लंच के लिए दाल–चावल यहीं बना रहे हैं मिस कायरा ने फोन पर हमें कहा था।”

रिया आश्चर्यचकित थी कि मिस कायरा अपने अतिथियों के लिए इतनी सुविधा भी देती हैं क्या ? बहुत अच्छा बिजनेस सेन्स है मिस कायरा का नीलेश। डॉक्टर पुनः राउंड पर आये और दोनों बच्चों से हाल–चाल पूछे ”नाश्ता खाने के बाद उल्टी तो नहीं हुई ?”

”नहीं डॉक्टर”

”ठीक है तो अब आप डिस्चार्ज ले सकते हैं”

नीलेश और रिया दोनों एक–दूसरे को देख कर मुस्कुरा रहे थे। शायद डॉक्टर भी मिस कायरा की पहचान के हैं। खैर जो भी हो अब हम होटल चलते हैं।

होटल जा कर दोनों बच्चे अपने–अपने कमरों में सो गए थे। रिया–नीलेश को अब चैन की साँस आयी थी। बच्चों की स्थिति देख कर विचार आया कि काज़ा के पहाड़ों पर स्थित देश का सबसे ऊँचा पोस्ट ऑफिस देखे बगैर ही लौटना होगा। एक दिन तो अस्पताल और बच्चों की नासाज तबीयत में ही खत्म हो गया था।

शाम को मिस कायरा स्वयं ही चाय लेकर उनके कमरे में आ गयी थीं। अपने पति के बारे में बताते हुए बोलीं "यहाँ सामने मोनेस्ट्री है न वहाँ के स्कूल में मेरे पति अध्यापक रहे हैं मिस्टर राणा" बड़ा बेटा नेवी में है और यह छोटा मेडिकल की तैयारी कर रहा है।

बातों ही बातों में रिया बोली "मिस कायरा मैं आपसे अत्यधिक प्रभावित हूँ। आपने हमारा और बच्चों का इतना ख़याल रखा जैसे कोई परिवार का सदस्य हमारे साथ हो। साथ ही में मैं आश्चर्यचकित भी हूँ कि आप इतना मैनेज कैसे कर लेती हैं ? और तो और आप अस्पताल भी आने वाली थीं हमारे लिए।"

अरे ! यह तो मेरी ड्यूटी है, मैं उस अस्पताल में नर्सों की इंचार्ज हूँ। नौकरी है वहाँ मेरी। और रही बात आवभगत की तो वह भी तो इतने बरसों नर्स की ड्यूटी करने से आया। हमारा पहला काम ही मरीजों को कम्फर्टेबल करना होता है। हमें ट्रेनिंग दी जाती है इस बात की। फिर इतने बरसों के काम का तजुर्बा व्यवहार में तो आना ही है।

**"मैं कहूँगी यह नर्स के पेशे का नहीं अपितु आपका अपना स्वभाव एवं संस्कार हैं वरना थकती तो आप भी होंगी न" "हम्म मैं बोलती बहुत विनम्रता से हूँ, यदि कोई बुरा व्यवहार करे तो भी मैं पुनः विनम्रता से बात करती हूँ। "मिस कायरा मुस्कुरा रही थीं।**

**फिर थोड़ा ठहर कर बोलीं "रिया आप ही बताइये साथ में क्या लेकर जाना है ? यहाँ सब से हँस बोल लिए, जरूरत के समय किसी के काम आये वही तो जमा–पूंजी और खुशी होती है न"**

ओहो ! तो यह बात है, मैं तो सोच रही थी यदि आप न होतीं तो यहाँ आते ही बच्चों का बीमार हो जाना हमें कितना भारी पड़ता। आपके होने से ऐसा महसूस हुआ जैसे हम अपने ही घर में हैं। बहुत ख़याल रखती हैं आप अपने गेस्ट का एवं प्यार से खिलाती–पिलाती हैं।

"मैं कहूँगी यह नर्स के पेशे का नहीं अपितु आपका अपना स्वभाव एवं संस्कार हैं वरना थकती तो आप भी होंगी न" "हम्म मैं बोलती बहुत विनम्रता से हूँ, यदि कोई बुरा व्यवहार करे तो भी मैं पुनः विनम्रता से बात करती हूँ। "मिस कायरा मुस्कुरा रही थीं।

फिर थोड़ा ठहर कर बोलीं "रिया आप ही बताइये साथ में क्या लेकर जाना है ? यहाँ सब से हँस बोल लिए, जरूरत के समय किसी के काम आये वही तो जमा–पूंजी और खुशी होती है न"

"ह्म्म्म, रिया मुस्कुरा दी" "ओके गुड नाइट" अगली सुबह उन्हें वापिस शिमला के लिए रवाना होना था। नाश्ता खा कर जैसे ही रवाना हुए ड्रायवर ने उदासी दिखाते हुई कहा "मैडम जी यहाँ घूमना तो रह ही गया" तभी मिस कायरा उनकी गाड़ी के पास आ खड़ी हुई थीं। "अपना और बच्चों का ख़याल रखना रिया" "आप, आपका आतिथ्य, आवभगत मुझे सदैव याद रहेंगे मिस कायरा, न जाने मैं आपका यह ऋण कभी उतार पाऊँगी या नहीं। आपने अस्पताल में भी जो मदद की, वरना हम तो इस नयी जगह पर डर ही गए थे किसी और को जानते भी तो नहीं यहाँ पर" "कोई ऋण नहीं यह सब मैं खुशी से करती हूँ" "आपका होटल गूगल पर है न, मैं वहाँ इसके लिए रिव्यू लिखूँगी" "दिस विल बी मोर देन एनफ फॉर मी" गाड़ी रवाना हो गयी थी, दोनों हाथ हिलाते हुए मुस्कुरा रही थीं। ऊपर से रिमझिम फुहार बरस रही थी।

मिस कायरा का सन्देश आया "शुष्क जलवायु के चलते यहाँ काजा में बारिश कभी–कभार ही होती है, ना के बराबर लेकिन आप आयीं तो हो रही है। ऐसा मत सोचना कि आप बगैर कुछ देखे जा रही हैं।"

"बिलकुल नहीं मैं जानती हूँ कि मैं एक अनोखी महिला से मिल कर जा रही हूँ। "रिया ने केयरिंग स्माइली भेज दिया था। ◆

**पता : कासाग्रान्ड अमेथिस्ट,**
**शोलिंगा नालूर, चेन्नई–600119**
**मो. : 9597172444**

# मनैया

❑ डॉ. प्रीति गुप्ता

मनैया जो ठाकुरगंज गाँव के पुरोहित की इकलौती बेटी है, जहाँ–जहाँ उसके बाबा कथा बाँचने जिस भी घर जाते, साथ में मनैया भी उछलती–कूदती जाती। अभी वो 10 साल की ही है। बाबा के साथ–साथ अब उसे भी पोथी पढ़नी आ गई है। स्कूल तो कभी वो गई ही नहीं पर फिर भी उसे अक्षरों का पूरा ज्ञान है।

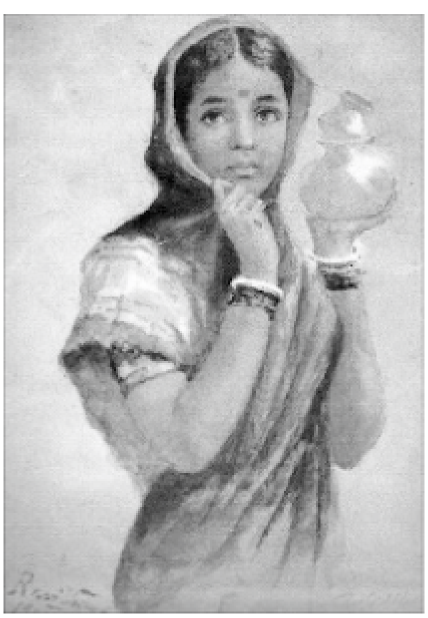

गाँव के सभी लोग उसे प्यार से 'छोटी पंडितानी' कहते और वह ये सम्मान भरा नाम सुनकर खुशी से गद्‌गद हो जाती। 'छोटी पंडितानी' में उसे अपना आदर नज़र आता था, क्योंकि उसे मनैया नाम ज्यादा अच्छा नहीं लगता। जब उसने अपने बाबा से पूछा कि बाबा आपकी पोथी में कहानियों में इतने अच्छे–अच्छे नाम हैं फिर भी मेरा नाम आपने मनैया क्यों रख दिया ? इस नाम का कोई मतलब ही नहीं मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता, तब उसके बाबा ने बताया कि बिटिया तू बड़ी भाग्यवान है हमारी कोई संतान नहीं हो रही थी दूर गाँव में एक देवी जी का पवित्र स्थान है जिसे ''मन्नत–मैया'' के नाम से जाना जाता है। हम और तुम्हारी माई हम दोनों को किसी ने बताया कि ''मन्नत–मैया'' से जाकर मन्नत माँगो वो अवश्य पूरी करेंगीं अगर तुम्हारा मन सच्चा है और वाकई में तुम सच्चे दिल से संतान की कामना रखते हो तो तुम्हारी मन्नत खाली नहीं जायेगी। बस फिर क्या तुम्हारी माई के बार–बार आग्रह करने पर हम लोग चले गये ''मन्नत–मैया'' के स्थल पर और निर्जल रहकर पूरी एक रात और एक दिन हम दोनों ने वहाँ पूजा–अर्चना की, मन्नत माँगी और फिर वापस आ गये। ठीक नौ महीने बाद ''मन्नत–मैया'' ने तुम्हें हमारी गोद में दे दिया और उन्हीं ''मन्नत–मैया'' के नाम पर हमने तुम्हारा नामकरण भी कर दिया इसी वजह से तुम्हारा नाम ''मनैया'' पड़ गया।

इतना सब कुछ सुनने के बाद मनैया को अपने नाम से बेहद प्यार हो गया जिसमें माई एवं बाबा का इतना दुलार भरा था। मनैया बहुत ही भोली एवं भली लड़की थी। चंचल एवं हँसमुख साधारण से परिवार में जन्मी बिना स्कूली शिक्षा के ही पूरी तरह शिक्षित थी। समय रहते मनैया की माई ने मनैया को सारे घरेलू हुनर सिखा दिए थे अँगीठी–फूँकना, आटा–गूंथना, कुँए से

पानी भर के लाना, आँगन–लीपना, गाय को चारा–पानी देना, कभी–कभी तो जब मनैया के बाबा घर पर नहीं होते तो मनैया खुद ही दूध भी दुह लेती थी। मनैया से उसकी माई और बाबा दोनों ही प्रसन्न रहते उसके बाबा तो उसे साक्षात् ''मन्नत–मैया'' समझते, उसका दोनों पैर छूते, बहुत दुलार करते थे। समय बीतते देरी थोड़ी न लगती है वह भोली–भाली 10 साल की मनैया अब लगभग उन्नीस साल की हो चुकी थी। माई और पुरोहित बाबा को अब मनैया के हाथ पीले करने की चिंता सताने लगी। मनैया से जब भी उसकी माई ब्याह के बारे में बात करतीं तो वह बिलकुल उदास हो जाती, उसे अपने बाबा और माई को छोड़कर कहीं जाने की बात ही खटकने लगती वह रुआँसी होकर 'काली' (उसकी गाय) के पास जाकर बैठ जाती और उससे मन ही मन ढेरों सवाल करती और ये भी कहती कि 'काली' अगर मुझे मजबूरन जाना ही पड़ा तो तू मेरी बूढ़ी माई और बाबा का ख़याल रखना। 'काली' पुरोहित की पुरानी गाय से जन्मी बछिया थी बिलकुल काली जिस वजह से उसका नाम ही काली पड़ गया और मनैया एवं काली लगभग साथ ही साथ बड़ी हुईं। मनैया को काली से बेहद लगाव था। माई तो कहतीं कि चल जब तू विदा होकर जायेगी तो तेरे साथ ही तेरी काली को भी विदा कर देंगें और हुआ भी वही। गाँव के जमींदार साहब का इकलौता पुत्र 'नंदन' बड़ा ही होनहार लड़का था वह पढ़–लिखकर बैरिस्टर बाबू बन चुका था। उसकी माँ बचपन में ही चल बसीं थीं। दादी ने बड़े लाड़ व प्यार से पाला था। जमींदार साहब ने अपने बेटे के प्यार में दूसरी शादी भी नहीं की। जमींदार साहब ने खुद ब खुद ही पुरोहित से बात की। मनैया को वो बचपन से जानते हैं सो उन्होंने अपने मन की बात पुरोहित से कर दी। पहले तो पुरोहित चौंके कि इतने बड़े जमींदार और कहाँ हम पुजारी, कथा बाँचकर गृहस्थी चलाते हैं हम कैसे अपनी कन्या इन्हें सौंप पायेंगे ? ये इतने बड़े आदमी और हमारे पास सिर्फ मनैया एवं काली के और कोई लक्ष्मी नहीं जो हम इन्हें दान दें पायें। जमींदार साहब बड़े दिलवाले थे उन्होंने कहा कि आप के पास लक्ष्मी नहीं तो क्या हुआ सरस्वती तो है आपकी सरस्वती हमारी लक्ष्मी हुई। यह सुनकर पुरोहित के आँख से आँसुओं की धारा बह निकली उन्होंने तुरंत जमींदार के लिए पैर पकड़ लिया और कहा कि मैं बहुत ही भाग्यवान हूँ और उससे भी भाग्यवान मेरी बिटिया जो आप जैसे नेक इंसान के घर जा रही है। जमींदार साहब ने पुरोहित को उठाकर गले से लगा लिया ये कहते हुए कि पंडित होकर मेंरे पैरों में मत पड़ो पुरोहित मुझे पाप चढ़ेगा।

**गाँव के सभी लोग उसे प्यार से 'छोटी पंडितानी' कहते और वह ये सम्मान भरा नाम सुनकर खुशी से गद्‌गद हो जाती। 'छोटी पंडितानी' में उसे अपना आदर नज़र आता था, क्योंकि उसे मनैया नाम ज़्यादा अच्छा नहीं लगता। जब उसने अपने बाबा से पूछा कि बाबा आपकी पोथी में कहानियों में इतने अच्छे–अच्छे नाम हैं फिर भी मेरा नाम आपने मनैया क्यों रख दिया ? इस नाम का कोई मतलब ही नहीं मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता, तब उसके बाबा ने बताया कि बिटिया तू बड़ी भाग्यवान है हमारी कोई संतान नहीं हो रही थी दूर गाँव में एक देवी जी का पवित्र स्थान है जिसे ''मन्नत–मैया'' के नाम से जाना जाता है।**

शुभ–लगन में नंदन से मनैया का ब्याह बड़े धूमधाम से हो गया और जैसा कि मनैया की माई ने कहा था कि काली को भी मनैया के साथ विदा कर देंगे सो काली भी मनैया के साथ विदा हो गई। जमींदार के यहाँ नंदन की दादी ने मनैया की आवभगत की, बड़े प्यार व सम्मान के साथ अपने घर ले आईं। मनैया को तो एक और बाबा मिल गये थे जो पुरोहित से भी ज्यादा ध्यान रखते मनैया का एवं दादी भी मनैया से बहुत लाड़ करतीं थीं। मनैया ने अपने कुशल व्यहार से सबके मन में अपने लिए विशेष जगह बना ली थी। नंदन जो पहले इतना उदास सा रहता था किसी से बात–चीत नहीं करता था, माँ के न होने का दर्द जो उसने सहा है इसी वजह से वह ज्यादा खुशमिजाज़ व हँसी–मज़ाक नहीं करता था। पर विवाह के बाद वह धीरे–धीरे परिवर्तित होने लगा। उसका स्वभाव मधुर हो गया उसे लोगों से मिलना–जुलना बातचीत करना अच्छा लगने लगा। अब उसे घर में रौनक दिखने लगी। मनैया सबका ख्याल रखती थी। बीच–बीच में अपनी माई व बाबा से मिल आती उनका भी ध्यान रखती व अपने ससुराल का भी ध्यान रखती बड़ा अच्छा तारतम्य बिठा लिया था उसने दोनों घरों के बीच एवं हर रिश्ते को मजबूती से बाँध रखा था।

विवाह हुए लगभग एक वर्ष हो गया बैरिस्टर नंदन को केस के सिलसिले में अक्सर शहर जाना पड़ता था। कभी–कभी तो वह रात तक घर पहुँच जाते थे पर अक्सर उन्हें शहर में केस खत्म न होने की वजह से रुक जाना पड़ता था इधर मनैया इंतजार करती और जब नंदन बाबू आ जाते तो झट हाथ मुँह धुलाकर पहले पति को खाना खिलाती फिर खुद खाती। इसी बीच नंदन की बुआ अपने बेटे शिवम के साथ गाँव आ गईं कुछ दिन रहने एवं शिवम के लिए गाँव के ही एक रिश्तेदार के यहाँ लड़की देखने। हालाँकि बुआ तो शहर में रहती थीं। शिवम के साथ उसकी छोटी बहन भी आई थी पायल वो अभी 10 साल की थी। उसकी छुट्टियाँ शुरू हुई थीं तो वो लोग आ गये चूँकि नंदन के विवाह पर नहीं आ पाये थे। दादी से मनैया की बहुत तारीफ सुन रखी थीं इसीलिए भी उनको बहू को देखने तो आना ही था। मनैया की तारीफें सुनकर ही तो वो भी राज़ी हो गईं कि शिवम की भी शादी गाँव की ही लड़की से करेंगे क्योंकि शहर की लड़कियाँ बड़ी मॉडर्न होती हैं। बुआ को मनैया बहुत पसंद आई, पायल भी मनैया भाभी से जल्दी ही घुल मिल गई पर शिवम थोड़ा धीरे–धीरे घुला–मिला चूँकि वह बड़ा था, मनैया का पद तो बड़ा था पर उमर में वह शिवम से भी छोटी थी। बैरिस्टर बाबू भी 10 साल बड़े थे मनैया से। नंदन को फिर शहर जाना पड़ा। अबकी बोलकर गया था कि दो–चार दिन लग जायेंगे इस लिए इंतजार मत करना। बल्कि बुआ ने नंदन को टोका भी था कि इतनी कच्ची उम्र की बहू को ज्यादा दिन के लिए अकेली न छोड़ा करो बिचारी घबड़ा जायेगी। नंदन ने कहा बुआ मैं इसी कोशिश में लगा हूँ कि मेरा काम हो जाय तो मैं भी शहर में ही मनैया के साथ ही रुकने का बंदोबस्त कर लूँ कि बार–बार आना–जाना न पड़े पर दादी व बाबूजी की देखभाल भी तो जरुरी है। बुआ क्या बोलतीं सही तो कह रहा था नंदन। मनैया सर पर आँचल डाले पर्दे की आड़ में खड़ी सब सुन रही थी और अश्रु भरे आँखों से नंदन को जाते हुए देख रही थी। नंदन के जाने के बाद पायल ने मनैया भाभी का खूब दिल बहलाया, गाना सुनाया, अपना नृत्य दिखाया, भाभी भी उसके साथ नृत्य करने लगी अचानक बीच में शिवम आ गया, मनैया सकुचाते हुए किनारे बैठ गई। शिवम ने कुछ कहा नहीं चुपचाप चला गया। फिर मनैया व पायल नाचने, गाने लगीं। इसी बहाने मनैया नंदन की याद को भूल गई थोड़ी देर के लिए। नंदन की बुआ, पायल, शिवम एवं दादी शिवम के लिए लड़की देखने उनके रिश्तेदार के यहाँ चले गये। सबको लड़की पसंद आ गई शिवम से पूछा तो कुछ खास नहीं महत्व दिया कहा अगर सभी को पसंद है तो मुझे भी पसंद है और लड़के वालों की तरफ से हाँ हो गयी। मनैया की माई और पुरोहित बाबा भी आये नंदन की बुआ से मिलने। शिवम के पापा तो नहीं आ सके थे शहर में उन्हें काम बहुत था ऑफिस का। सो दादी व बुआ ने रिश्ता तय कर दिया। दादी बहुत खुश थीं कि नाती की बहू भी उनके पसंद की आ रही है। शिवम को शहर जाना था जल्दी क्योंकि काम का नुक्सान हो रहा था। उसने अपनी माँ से कहा अब चलो घर, तो पायल ने कहा भैया मैं अभी नानी के यहाँ और रुकना चाहती हूँ, मुझे मनैया भाभी के साथ बहुत अच्छा लगता है। शिवम ने तुरंत मनैया को देखा अचानक दोनों की नजरें मिल गईं मनैया झेंप गई, तब शिवम ने कहा ठीक है पायल तुम यहीं रहो जब तुम्हारी छुट्टियाँ समाप्त हो जायेंगीं तब मैं फिर तुम्हें लेने आ जाऊँगा। पायल खुश हो गई और मनैया भी खुश हो गई। शिवम माँ के साथ शहर चला गया। पायल भी खेलते–खेलते थक कर सो गई, फिर मनैया ने रोज की तरह बाबू जी को दूध का गिलास दिया और दादी के पास जाकर उनका पैर दबाया, जब दादी सो गईं तब मनैया भी अपने कमरे में आकर सो गई।

मनैया के घर से खबर आई कि पुरोहित जी को खाँसी का दौरा पड़ा है, तुम्हें तुरंत घर बुलाया है। जमींदार साहब ने तुरंत अपनी बग्घी निकलवाई और मनैया को भेज दिया। जब–तक मनैया घर पहुँची तब–तक पुरोहित जी चल बसे... मनैया बहुत रोई, बहुत दुःखी हुई। माई के गले से चिपटकर रोती रही, सब गाँव वालों ने आकर 'क्रिया–करम' किया जमींदार साहब भी आये थे। नंदन बाबू का कुछ पता ही नहीं चला खबर भेजी, पर कोई जवाब ही नहीं आया। मनैया बहुत टूट गई थी। अपने–आपको बहुत ही असहाय और निराधार समझ रही थी। जी–जान से जिसको प्यार करती थी वो बाबा उसे छोड़कर चल बसे ...माई अकेली हो गई। माई का दुःख मनैया से सहा नहीं जा रहा था ऐसे में वो माई को क्या बताये कि नंदन बाबू का कुछ पता नहीं चल रहा है, क्या करे, फिर

उसे जमींदार साहब के साथ ससुराल लौटना पड़ा, पायल व दादी अकेली जो थीं। दूसरे ही दिन शिवम भी आ गया पायल को लिवा जाने के लिए, पायल चौंक गई कि इतनी जल्दी कैसे आ गये। शिवम को मनैया के बाबा के बारे में पता लगा और ये भी पता लगा कि नंदन का कुछ अता–पता नहीं है, तो उसे मनैया से थोड़ी सहानुभूति सी हो गई और मनैया का दुःख वो समझने लगा। उसने मनैया से कहा आप परेशान मत होइये नंदन भैया जल्दी ही आ जायेंगे। हम भी जाकर शहर में पता लगाएंगे। इतना सुनकर मनैया को थोड़ी बहुत तसल्ली हो गई। दूसरे दिन शिवम पायल को लेकर चला गया।

धीरे–धीरे एक महीना होने को आ गया और नंदन का कुछ पता ही नहीं मनैया तो बेहाल–सी हो गई नंदन से उसका अटूट रिश्ता जो था। वो बहुत प्यार करती थी अपने पति को, उनके कपड़ों को सूँघती, उनकी तस्वीर निहारती, खोई–बिखरी रहती। अपने सारे अच्छे रंग–बिरंगे कपड़े व गहनें उतार कर रख दिए कि जब नंदन आयेंगे तभी पहनेंगे। जिन–जिन कपड़ों में नंदन ने उसकी तारीफ की थी कि तुम बहुत अच्छी लगती हो इन कपड़ों में उन–उन कपड़ों को उसने सहेज कर रख दिया था कि नंदन के आने पर पहनेगी पर एक महीना हो गया नंदन नहीं आये। मनैया अब पहले वाली मनैया नहीं, बिलकुल उदास–उदास सी रहने लगी। दादी एवं जमींदार बाबू करें तो क्या करें उनसे भी मनैया का दुःख देखा नहीं जाता और बेटे की चिंता अलग सताती कि क्या बात है कोई खबर क्यों नहीं की नंदन ने, कहीं किसी परेशानी में तो नहीं ? शिवम फिर आया दो दिन बाद कि नंदन भैया का कोई पता नहीं लग पा रहा है मनैया बिल्कुल ही निराश हो गई और फूट–फूट कर रोने लगी दादी अपने कमरे में सो रहीं थीं और जमींदार बाबू घर पर नहीं थे, इधर–उधर कुछ अपने बेटे के बारे में पता ही करने गये थे। मनैया का इस तरह से फूट–फूट कर रोना शिवम के दिल पर हथौड़े की तरह लग रहा था उससे सहन नहीं हो रहा था मनैया का ये दर्द, वो क्या करे, कैसे भाभी का दिल बहलाए, कैसे खुश रखे, उसके दिमाग ने जो कहा वो किया। उसने अचानक मनैया को खींचकर सीने से लगा लिया, मनैया तो बेसुध सी थी, रोती ही जा रही थी, उसे ये भी होश नहीं कि, उसे शिवम ने सीने से लगा रखा है या नंदन ने वो बदहवास सी रो रही थी। शिवम उसे उसके कमरे में ले गया और अचानक मनैया के साथ वो सब कुछ कर डाला जो उसे नहीं करना चाहिए था। मनैया छुड़ाती रही अपने–आपको बहुत बचाने की कोशिश की पर नाकामयाब रही ....। शिवम के मन में ये सब कुछ पहले से था या अचानक हुआ। क्या वो मनैया से धीरे–धीरे प्यार करने लगा था या उसके मन में सिर्फ वासना जाग उठी थी थोड़ी देर के लिए ? मनैया क्या करती . ....। दुसरे दिन शिवम बिना किसी से कुछ कहे शहर चला गया। मनैया ने निश्चय किया कि अब जिंदगी भर शिवम का मुँह नहीं देखेगी और वह अपना एक और दर्द किसके साथ बांटे? बूढ़ी दादी, जो पहले ही नंदन के ग़म में बीमार हुई जा रही हैं, या फिर अपनी बेहाल माई से, जो बाबा के जाने के गम में डूबी हुईं हैं, उन लोगों को और दर्द कैसे दें ? रहे जमींदार बाबू, तो उनसे कहने की हिम्मत कहाँ से जुटाये ? इतनी बड़ी बात, वो भी इतनी शर्मनाक ? वो करे तो क्या करे ? नंदन आ जाता तो वो सब कुछ उसे बता देती, एक वही तो था, जिससे वो सब कुछ बता सकती थी, एक साथ तीन–तीन दर्द और अब कैसे सहे ? शहर से नंदन की बुआ भी लौटकर नहीं आईं, न पायल आई हाल–चाल लेने ? बाद में पता चला कि शिवम ने शादी करने से मना कर दिया और वो रिश्ता जो पक्का हुआ था, टूट गया। मनैया माई से मिलने तो जाती, पर कुछ कहती नहीं, थोड़ी देर वहाँ रुककर फिर ससुराल आ जाती। उधर मनैया के पति को गये हुए डेढ़ महीने हो गये और इधर मनैया को पता चला कि वो डेढ़ माह के गर्भ से है। एक खुशी की लहर सी दौड़ आई, मनैया की जिंदगी में जीने का एक रास्ता तो मिला नंदन न सही उसकी निशानी तो सही जिसके सहारे वो जी लेगी।

छः महीने बाद अचानक नंदन लौटा घर, बढ़ी हुई दाढ़ी, मूंछे और लंबे–लंबे बाल, एक गंदी सी कमीज व पतलून डाले हुए काफी दुबला भी हो गया था। मनैया तो उसे देखकर पहचान ही नहीं पाई, नंदन ने भी खामोश घर के अंदर पाँव रखा। जमींदार साहब तो जैसे रो पड़े और नंदन को गले से लगाते हुए कहा कि मैं तो समझा था कि तुम अब इस दुनिया में... 'ऐसा मत बोलिए बाबूजी आपके हाथ जोड़ती हूँ'.... रूँधे गले से बीच में ही मनैया बोल पड़ी। दादी भी

चलने–फिरने में असमर्थ जब कमरे में ये सब आवाजें सुनीं तो दीवार का सहारा लेते हुए बाहर आँगन तक आ ही गईं। कहने लगीं हमारी साँसें इसीलिए रुकी थीं कि जब तक नंदन नहीं आता हम कैसे जाते, बिना नंदन से मिले ? हम जानते थे कि हमारे जिगर का टुकड़ा सही सलामत है, एक न एक दिन वापस जरूर आएगा। फिर बाबू जी खुद ही छड़ी उठाकर गये नाई को बुलाकर लाये, उसने तुरंत वहीं आँगन में नंदन की दाढ़ी साफ की बाल छोटे किये। नंदन नहा–धोकर साफ हो गया। मनैया ने खाना लगा दिया खाने के बाद नंदन ने बताया कि बाबू जी मैं बहुत बुरा फँस गया था, एक केस के सिलसिले में न जाने मुझसे कैसे–कहाँ गलती हो गई और मुझे छह महीने हवालात में काटनी पड़ी, मेरी किसी ने नहीं सुनी। वहाँ सिर्फ पैसा बोलता है, झूठ बिकता है, झूठ खरीदा जाता है और पैसा ही शहर–वासियों का ईमान–धरम सब–कुछ है, पैसा ही भगवान है। दादी बीच में ही बोल पड़ी बेटा अब तू सब कुछ भूल जा, नए सिरे से ज़िंदगी शुरू कर, अब तेरे घर भी नन्हा–मेहमान आने वाला है। ये सब मनैया के पुण्यों का फल है, जो तू आज सही–सलामत अपने घर लौट आया।

मनैया अब पति के पास जाये भी तो कैसे ...दिल पर जो इतना बड़ा बोझ है। एक तरफ नंदन के आने की खुशी तो दूसरी तरफ बीती ज़िंदगी में उसके साथ जो घटनाएं घटीं, उसका दुःख क्या–क्या नंदन को बताए, बाबा का गम, नंदन के न आने की पीड़ा और अपने साथ हुए बलात्कार की व्यथा, कैसे सब कुछ एक साथ बता दे, नंदन तो खुद ही इतनी परेशानियाँ उठाने के बाद यहाँ वापस आ पाया है। जब वह धीरे–धीरे अपने दुःख से उबर जायेगा तब उसे बता देंगें, इन्हीं सब उधेड़बुन में मनैया थी, तब तक नंदन ने पीछे से कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, क्या बात है, कहाँ खो गई, कुछ बताओगी नहीं अपने बारे में, कैसे रही, क्या–क्या सोचती रही मेंरे बारे में और ये छोटे मेहमान ...इनके बारे में तो कोई अंदाजा ही नहीं था। बड़ी खुशी हो रही है घर लौटकर....खुशियाँ मेरा इंतजार कर रहीं थीं। मनैया कुछ न बोल सकी, उसकी आँखों से आँसूं निकल पड़े। धीरे–धीरे नौ महीनें निकल गये, मनैया को एक प्यारा–सा बेटा हुआ। मनैया की माई भी आई कहने लगीं कि आज तुम्हारे बाबा जिंदा होते तो कितने खुश होते नाना बनकर ....और सबकी आँखों से आँसूं छलछला पड़े। फिर दादी ने बात संभाली ये कहके कि कोई बात नहीं मनैया की माँ तुम तो 'नानी' बन गई न चलो लड्डू खिलाओ फिर सब हँसी–खुशी में वातावरण बदल गया। जमींदार साहब पोते को पाकर बहुत खुश और दादी पर पोते को पाकर बहुत खुश हुईं। नंदन ने पूछा दादी बुआ क्यों नहीं आईं ? तो दादी ने कहा, कहलवाया तो था पर न जाने क्यों वहाँ से कोई नहीं आया। तुम्हारे न रहने पर शिवम जरूर एक–दो बार आया था। शिवम का नाम सुनते ही मनैया थर–थर काँपने लगी और फिर नंदन से नज़र नहीं मिला पा रही थी। सारा पिछला बीता हुआ दृश्य उसको याद आ गया उसके रोंगटे खड़े हो गये, सबके जाने के बाद नंदन ने उससे पूछा क्या बात है मनैया, तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न मनैया, क्यूँ परेशान लग रही हो ? तब मनैया ने थोड़ी हिम्मत बनाई और कहा, मैं आपसे कुछ बात करना चाहती हूँ। जब आप आये थे तब आप स्वस्थ नहीं थे और अब सब ठीक हो रहा है, मेंरे दिल पर बहुत बड़ा बोझ है जो मैं सिर्फ आपसे ही कह सकती हूँ .. तब–तक बीच में काली की आवाज आई ..बाँ ...आ... आ.. आ.. आ... बाँ.... अ ..आ...आ.... । मनैया उठकर काली के पास गई उसको सहलाया पानी दिया दस–पाँच मिनट उसके पास बैठकर वापस चली आई। जब मनैया के साथ कोई नहीं था तब मनैया काली से ही तो अपने मन की बातें करती थी सिर्फ काली जानती थी कि मनैया बेगुनाह है और वो ये भी जानती

**शुभ–लगन में नंदन से मनैया का ब्याह बड़े धूमधाम से हो गया और जैसा कि मनैया की माई ने कहा था कि काली को भी मनैया के साथ विदा कर देंगें सो काली भी मनैया के साथ विदा हो गई। जमींदार के यहाँ नंदन की दादी ने मनैया की आवाभगत की, बड़े प्यार व सम्मान के साथ अपने घर ले आई। मनैया को तो एक और बाबा मिल गये थे जो पुरोहित से भी ज्यादा ध्यान रखते मनैया का एवं दादी भी मनैया से बहुत लाड़ करतीं थीं। मनैया ने अपने कुशल व्यहार से सबके मन में अपने लिए विशेष जगह बना ली थी। नंदन जो पहले इतना उदास सा रहता था किसी से बात–चीत नहीं करता था, माँ के न होने का दर्द जो उसने सहा है इसी वजह से वह ज्यादा खुशमिजाज़ व हँसी–मज़ाक नहीं करता था।**

थी कि मनैया की बेगुनाही साबित नहीं हो पायेगी क्योंकि ये लोग ठहरे जमींदार शायद इसीलिए काली बीच में चीख पड़ी वो बेजुबान अगर बोल सकती तो बोल कर यह बात मनैया को अपने पति से बताने के लिए मना कर देती पर वह बाँ–बाँ करने के अलावा कुछ कर नहीं सकती।

मनैया ने माहौल देखा और पति का प्यार पाकर उस वाकये को उसने नन्दन से बता दिया और फूट–फूट कर रो पड़ी। नन्दन की त्यौरियाँ चढ़ गईं उसने कहा तुमने इतने दिनों से इस बातको छिपाये रखा दादी से, बाबूजी से किसी से नहीं बताया क्यों ? तुम्हें तो डूब कर मर जाना चाहिये इतना बड़ा कलंक माथे पर लगाये जिन्दा कैसे हो ? मनैया को काटो तो खून नहीं ये क्या हो गया नन्दन को अभी तो अच्छा–खासा था और मेरे साथ सहानुभूति रखने के बजाय मुझको भला–बुरा कह रहा है, वह अपने–आप पर और अपने बच्चे पर तरस खाकर रोने लगी। नन्दन कमरे से बाहर निकल गया और सीधा बाबूजी के कमरे में गया। सुबह होते–होते दादी को भी सारी बातें पता लग गईं और बाहर आँगन में बैठ कर बड़बड़ानें लगीं कि तभी शिवम बार–बार आने लगा था और इसकी वजह से उसने भी यहाँ आना छोड़ दिया मेरे शिवम पर इल्जाम लगा रही है, तभी क्यों नहीं कहा? जमींदार साहब ने कुछ नहीं कहा, अपने कमरे में चले गये। न जाने नन्दन से क्या बात–चीत हुई, नन्दन मनैया को और उसके बच्चे को बिना कुछ कहे–सुने उसके मायके ले जाकर उसकी माई के पास छोड़ आया अंतिम शब्द यही बोला 'यह बच्चा मेंरा नहीं है' मनैया के तो जैसे होशहवास उड़ गये वह निस्तब्ध सी खड़ी रोते हुए बच्चे को लेकर नन्दन को जाते हुए आख़िरी बार देख रही थी.....बच्चे के रोने की आवाज सुनकर मनैया की माई बाहर आई और अचानक मनैया और उसके बच्चे को देखकर अवाक सी रह गई कि क्या हुआ सब–कुछ ठीक तो है न, मनैया कुछ न बोल सकी सिवाय इतना कि 'एक पिता ने अपने बच्चे को अपनाने से इन्कार कर दिया' माई ये बच्चा बिन बाप का हो गया। माई तो सर पकड़ कर बैठ गई, अगल–बगल वाले सब तमाशा देख रहे थे। मनैया निर्दोष होते हुए भी सजा की हकदार बनी और उसका बच्चा बड़ों की गलतियों का शिकार हो गया। निर्दोष बच्चे का क्या कसूर, समाज तो उसे पाप समझेगा..... मनैया ने सच बताया जिसकी सज़ा उसे मिल गई, यदि कुछ न बताती तो कुछ भी न बिगड़ता पर उसके दिल पर बोझ रहता वो अपने पति से सच्चा प्यार जो करती थी इसी वजह से बता दिया पर पति ......?? पति ने तो छह महीना कहाँ काटा, कैसे बिताया...? मनैया ने नहीं पूछा जो भी पति ने बताया, सही या गलत, मनैया ने तो स्वीकार कर लिया पर पति क्यों नहीं स्वीकार कर पाया? क्योंकि वह पुरुष है? वही दादी जो रातदिन मनैया की तारीफ करती थीं, जब बात अपने खून पर आई तो अपने खून को माफ कर दिया, और दुसरे के खून को झुटला दिया....? नन्दन ने सज़ा शिवम को न देकर मनैया को दे डाली व अपने ही बेटे को.....? इतना बड़ा स्वाभिमानी? जमींदार साहब सरस्वती को लक्ष्मी बनाकर ले गये थे और अब न वो लक्ष्मी रही न सरस्वती? कलंकिनी बन चुकी है, किसने उसे कलंकिनी बनाया? अगर मनैया चुप रह जाती तो आज उसे लक्ष्मी का, देवी का सम्मान मिलता पर सच्चे प्यार में धोखा खाकर उसने, बातकर अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मार ली, औंधे–मुँह गिर पड़ी ....

आज उसे गाँव में कोई भी छोटी पंडितानी नहीं कहता बल्कि ये कहता कि अच्छा हुआ ये सब देखने से पहले ही पुरोहित जी चल बसे। मनैया गाय का दूध बेचकर अपने बच्चे को पाल रही है। दूसरे दिन काली भी रस्सी तुड़ाकर वापस मनैया के गाँव आ गई, मनैया उसकी गर्दन पकड़कर खूब रोई कहने लगी काली तुमने मुझे रोका था पर मैं ही पति के प्यार में पागल समझ नहीं पाई। मनैया की माई को अब आँख से ठीक दिखाई नहीं देता रो–रो कर उनकी आँखें चली गईं। इतने मन्नत से जिस बच्ची को माँगा था उसके जीवन में इतना दर्द? इतनी बड़ी सजा क्यूँ? मनैया भी चारपाई पर लेटे अपने बच्चे के साथ आसमान में सिर गड़ाए सोच रही है कि आखिर 'मन्नत–मैया' ने मुझे भेजा ही क्यूँ? फिर मेंरे बाबा को .....और अब मुझे ......, इस हालत में देखकर क्यों 'मन्नत–मैया' बहुत खुश हो रही होंगीं? क्या पिछले जन्म के पापों का परिणाम है? इन्हीं सब सवालों के घेरे में पड़े हुए सोचते–सोचते कब मनैया की आँख लग गई पता ही नहीं चला ..............! ◆

**पता : ए–501, प्लूमेरिया, विभूतिखण्ड,**
**गोमतीनगर, लखनऊ**
**मो. : 9565181329**

# शाम ढल रही है

❑ सविता दास

रेलवे स्टेशन से बाहर निकलकर अजय टैक्सी का इंतजार करता है, सत्रह घंटे की यात्रा से थोड़ा–सा थका हुआ और बहुत ज्यादा जोश से भरा हुआ की आज पच्चीस साल बाद वह कॉलेज एल्युमिनी मीट में शामिल होने जा रहा था। उसके सारे दोस्त अब अपने–अपने जीवन में बस गए थे। बरसों बाद सबसे मिलने की उत्सुकता से वह इतना भरा हुआ था कि बुक की हुई टैक्सी का हॉर्न भी उसे सुनाई नहीं दिया। बगल में खड़े एक सहयात्री ने कंधे पर हाथ रखकर कहा तब जाकर अजय की तंद्रा भंग हुई। टैक्सी में सवार होटल की ओर चल पड़ा। यूं तो अब भी कई दोस्त सोशल मीडिया पर उसके संपर्क में थे पर कुछ दोस्तों का कोई अता–पता नहीं था, जिनमें प्रियंका भी एक थी। उसका ख़याल आते ही अजय की चेहरे की अनवरत मुस्कान एकाएक मंद पड़ गई, किसी गहरी उदासी ने मानों उसे घेर लिया हो। अजय और प्रियंका एक ही साथ पढ़ते थे, इतिहास दोनों का प्रिय विषय था और साथ में दोनों ने ऑनर्स लिया था। हर रोज कॉलेज में कक्षा के दौरान मिलने के अलावा भी सभी दोस्त कैंटीन में इकट्ठे चाय पीने जाते।

प्रियंका अक्सर अपनी सहेलियों के साथ बैठा करती और जब सभी किसी बात पर जोर से ठहाके लगाते तो वो बस मुस्कुराभर देती थी। अजय उसे दूर से निहारता रहता। कुछ अलग सी दिखाई पड़ती प्रियंका। गौरवर्णा प्रियंका कमर तक चोटी बांधे, माथे पर छोटी सी काली बिंदी लगाए, हल्के नीले रंग के सूट में बिलकुल शरद का आकाश लग रही थी। आज पहली बार उसे देख अजय के मन में इस तरह के विचार उमड़ रहे थे की वह खुद भी हैरान था। तभी दूर बैठी प्रियंका ने अपनी बाईं कलाई पर पहनी हुई ब्राउन बेल्ट की छोटी–सी घड़ी की ओर दिखाकर इशारे से अजय से पूछती है कि क्लास में फिर जाना है या नहीं।

अजय उसे ही घूर रहा होता है और उसके पूछने पर चौंक कर हड़बड़ी में हां! कह देता है। इन सबसे बेखबर प्रियंका सबसे अलग होकर अजय के साथ क्लास की ओर चल देती है। कॉलेज से दोनों बाहर आते ही हैं कि अजय देखता है की प्रियंका के पिता उसे लेने आए हैं। अजय चुपचाप उसे बाय कहकर अपने रास्ते साइकिल पर सवार होकर चल देता है। अजय के

पिता विद्यालय में अध्यापक थे और अजय ने भी पिता के नक्शे कदम पर चलते हुए कॉलेज में प्रोफेसर होने का सपना देखा था। बहुत आसान तो नहीं था पर वह अपने प्रयास में कोई कमीं नहीं रखना चाहता था। मां की अस्वस्थता, दो बहनों की जिम्मेदारी ने अजय को समय से पहले ही मैच्योर कर दिया था। अगले दिन कॉलेज से फील्ड ट्रिप जाने की तैयारी थी, डिपार्टमेंट के सभी छात्र बहुत खुश दिखाई पड़ रहे थे। अजय भी उत्साहित था और थोड़ा बैचेन भी क्योंकि उसे आज पहली बार यह अनुभव हो रहा था कि वह प्रियंका का इंतज़ार कर रहा है। हालांकि दोनों कई सालों से साथ में ही पढ़ रहे थे पर अब उसके ख़यालों में ये प्यारा सा बदलाव उसे भी भा रहा था। जिम्मेदारियों के बारे में सोचते–सोचते उसने अपने लिए कुछ सोचा ही नहीं था। वो इसी कशमकश में कि हल्के गुलाबी सूती साड़ी में कंधे पर अपना बैग रखे हुए प्रियंका बस की ओर आगे बढ़ती दिखाई देती है, अजय एकटक उसे देखता रहता है। हल्की सी, साड़ी से मेल खाती लिपस्टिक प्रियंका के चेहरे के ओज को मानो और भी निखार रही थी। सादगी और सुंदरता की कोई उपमा हो तो प्रियंका उसमें खरी उतरती। वह धीरे–धीरे सहेलियों से बातें करते हुए खिड़की से बाहर कुछ ख़यालों में भी खो जाती। अजय उसके विपरीत सीट से उसे निहार रहा था। बेशक सबसे नज़र चुराकर। प्रियंका के पिता इनकम टैक्स के बड़े अफसर थे। इकलौती बेटी, नाज़ों से पली। पर प्रियंका के व्यक्तिव की सौम्यता, उसकी सहजता ने सभी का मनमोह लिया था। अजय जानता था कि मन के किसी कोने में जो एक अनजान पौधा पनप रहा था शायद वह किसी बड़े पेड़ का रूप ले लेगा। भविष्य के बारे में सोचता तो उसे एक बड़ा समर स्थल दिखाई देता जिसमें वह एक अथक सिपाही है और फिर एक हाथ उसके हथेली को कसकर पकड़ता दिखाई देता, जो.... जो प्रियंका का हाथ था, वो देखता उसकी आंखें मुस्कुरा रही थी। अजय मारे खुशी के मुस्कुरा उठता है। तभी उसे ज्ञात होता है कि उसके दोस्त उसे देखकर हंस रहे होते हैं। अजय थोड़ा झेंप जाता है। अचानक टैक्सी होटल के सामने रुकती है और अजय अपनी यादों की दुनिया से वापस आता है। होटल रूम में घुसकर सबसे पहले अपने एल्युमिनी वाट्सएप ग्रुप में अपने दोस्तों को शहर में आने की सूचना देता है। तभी घर से उसकी पत्नी संध्या का कॉल आता है, ''जी !आप ठीक–ठाक पहुंच गए?'' संध्या पूछती है... ''कोई दिक्कत तो नही हुई?'' हां, मैं बिल्कुल ठीक हूं और होटल रूम भी काफी अच्छा है, ''नित्या क्या कर रही है?'' अजय अपने आठ साल की बेटी की खबर लेता है। वो ठीक है, अभी खेल रही है... सुनो! आप आराम करो, घर की चिंता मत करो, मैं संभाल लूंगी, आप बस कुछ समय अपने दोस्तों के साथ एंजॉय करो, यहां तो बस कॉलेज और घर!'' हल्की सी हंसी के साथ संध्या अपने पति को निर्देश देती है। ''ओके संध्या, तुम लोग भी अच्छे से रहना, कुछ जरूरत हो तो तुरंत मुझे ख़बर देना!'' ''ओके, ओके अजय सर, यू डोंट वरी एट ऑल, बाय!'' हंसते हुए संध्या कॉल रखती है। संध्या एक सुगढ़ और सुलझी हुई पत्नी है, बहुत ख़याल रखती है पूरे घर का। जॉब से छुट्टी ले ली है जब तक बेटी खुद सब करने लायक ना हो जाए। वो खुश है अपनी छोटी सी दुनिया में। अजय फ्रेश होकर होटल के डाइनिंग रूम में चाय के लिए उतर आता है। चाय के हर घूंट के साथ मानो अपने कॉलेज के दिनों में खो जाता है, फील्ड ट्रिप का दिन मानों उसके लिए सबसे महत्वपूर्ण दिन था। कॉलेज के अध्यापक छात्रों को विभिन्न स्थानों का दर्शन करवाते हुए उनके महत्व के बारे में समझाते हुए आगे बढ़ रहे होते हैं। अजय का ध्यान आज थोड़ा इधर–उधर हो रहा था। मन का कोलाहल इतना ज्यादा था कि होंठ उसे रोकने में असमर्थ लग रहे थे। लंच ब्रेक के बाद सभी छात्र अपने दोस्तों के साथ उस स्थान का आनंद लेने के लिए घूमने निकल जाते हैं। अजय एक खंडहर की सीढ़ियों में बैठा दूर पहाड़ों को निहारता है, ''अरे! अजय क्या बात है, गुमसुम हो आज!'' प्रियंका अजय के करीब बैठते हुए सवाल करती है। ''नहीं, ऐसी बात नहीं।'' अजय मुस्कुराते हुए जवाब देता है। प्रियंका ढलते हुए सूरज को देखकर कहती है, ''पता है अजय मुझे शाम का ढलना बहुत पसंद है, देखो ना आसमान में कितने रंग हैं अभी और धीरे–धीरे सब स्याह रंग में बदल जाएगा।''

अजय को लगा वो प्रियंका के मुख से कोई प्यारी प्रेम कविता सुन रहा हो। ''क्या बात है तुम तो अच्छी कविता रचती हो!'' अजय प्रियंका की आंखों में देखते हुए कहता है। प्रियंका खिलखिलाकर हंस पड़ती है, ''अरे! नहीं, नहीं मैं तो बस अपनी पसंद बता रही थी।'' ''तो ऐसा क्यों है कि तुम्हें ढलती शाम, ये अंधेरा, ये सब क्यों पसंद है?'' अजय प्रियंका को थोड़ा और जानने की कोशिश करता है। गहरी सांस

भरते हुए प्रियंका कहती है, ''देखो, यह सूरज जो डूब रहा है ना उसके साथ एक वादा भी है कल फिर ये उगेगा और इस अंधियारे को दूर कर देगा, और इस उम्मीद में ये रात कितनी भी गहरी हो बहुत आराम से बिताई जा सकती है, है ना!'' आसमान की और एकटक देखते हुए प्रियंका अपने विचारों की टोकरी से शब्द मानों फूलों की तरह बिखेर रही थी, पूरा वातावरण महक रहा था, इतनी पॉजिटिव बाते मानों अजय ने कभी नहीं सुनी थी। वह अनायास ही प्रियंका का हाथ थाम लेता है, और इससे पहले कि प्रियंका कुछ कहे, अजय कह उठता है, बहुत बधाई हो मेरी दर्शनशात्र की प्रोफेसर! ''तुम इतिहास को त्याग दो बालिके!'' अभी भी प्रियंका का हाथ अजय के हाथों में था दोनों ने हाथों को कसते हुए ज़ोर से ठहाका लगाया। ये ढलती शाम मानों सच कल का कोई अधूरा वादा पूरा करने के लिए सूरज को लेकर फिर आएगा। कम से कम अजय की आंखों में ये उम्मीद बस गई थी। ''अच्छा बताओ प्रियंका ग्रेजुएशन के बाद क्या सोचा है?'' अजय अपना हाथ पीछे करते हुए प्रियंका से पूछता है। ''कुछ खास नहीं मास्टर्स करके आगे सोचेंगे, अच्छा चलो वापस लौटने का समय हो गया।'' प्रियंका कुछ तेज़ कदमों से बस की ओर चल पड़ती है। अजय वापसी के दौरान अपने भविष्य के सुनहरे सपने बुनने लगता है।

**प्रियंका अक्सर अपनी सहेलियों के साथ बैठा करती और जब सभी किसी बात पर जोर से ठहाके लगाते तो वो बस मुस्कुराभर देती थी। अजय उसे दूर से निहारता रहता। कुछ अलग सी दिखाई पड़ती प्रियंका। गौरवर्णा प्रियंका कमर तक चोटी बांधे, माथे पर छोटी सी काली बिंदी लगाए, हल्के नीले रंग के सूट में बिलकुल शरद का आकाश लग रही थी। आज पहली बार उसे देख अजय के मन में इस तरह के विचार उमड़ रहे थे की वह खुद भी हैरान था। तभी दूर बैठी प्रियंका अपनी बाईं कलाई पर पहनी ब्राउन बेल्ट की छोटी सी घड़ी की ओर दिखाकर इशारे से अजय से पूछती है की क्लास में फिर जाना है या नहीं।**

अगले दिन कॉलेज बंद रहा, अजय के लिए मानो एक छुट्टी का दिन एक साल बराबर था। दूसरे दिन बहुत जल्दी वह कॉलेज पंहुच जाता है। नज़र रास्ते पर टिकी है, कब आएगी प्रियंका! आज मैं उससे दिल की बात कह कर रहूंगा, ख़यालों की कश्मकश में अजय उलझा रहता है तभी उसका दोस्त विनय कंधे पर हाथ रखकर पूछता है, अरे दोस्त क्या बात है ? इतने गुमसुम से क्यूं बैठे हो? नहीं तो ! ऐसी कोई बात नहीं! अजय उठकर कक्षा की ओर चल पड़ता है। अपनी सीट पर बैठा अजय, प्रियंका को आते देख अनायास ही हौले से मुस्कुराता है। प्रियंका उसे देख उसी बेंच पर बैठती है और अध्यापक के प्रवेश के बाद सभी उनकी बातों पर ध्यान देने लगते हैं। अजय अपने विचारों में फिर डूब जाता है। कक्षा खत्म होते ही अजय प्रियंका से कहता है, ''चलो कैंटीन होकर आते हैं, मुझे कुछ बात भी करनी है तुमसे।'' ओके! प्रियंका हामी भरती है। चाय का कप हाथ में लिए अजय अपना मन बांधता है और बिना उसकी आंखों में देखे कहना शुरू करता है, ''देखो प्रियंका, मैं जानता हूं ये सब कहने का यह उचित समय नहीं है, पर मैं अपने जीवन का एक अहम फैसला तुम्हारे परमिशन से लेना चाहता हूं।'' ''अच्छा! कहो फिर...'' प्रियंका भी अपने चाय के प्याले पर नज़र गड़ाए पूछती है। वो, तुम्हें पता है मैं इतिहास का प्रोफेसर बनना चाहता हूं और इस साल ग्रेजुएशन के बाद मैं दूसरे शहर मास्टर्स के लिए चला जाऊंगा... पर जाने से पहले मुझे तुमसे कुछ पूछना है, ''हां! पूछो ना!'' प्रियंका झट से जवाब देती है। ''क्या तुम मेरा इंतज़ार करोगी?'' अजय के इस सीधे–सपाट प्रेम प्रस्ताव के लिए अप्रस्तुत प्रियंका कुछ पलों के लिए स्तब्ध हो जाती है। फिर अचानक से मुस्कुराकर कहती है, 'मैं अपने निर्णय खुद नहीं लेती।'' इतना कहकर वह उठ खड़ी होती है और अजय की ओर मुस्कुराकर चल पड़ती है। शाम हो चली है, डूबते सूरज के साथ अजय को प्रियंका की कही बात याद आती है, ''देखो, यह सूरज जो डूब रहा है ना उसके साथ एक वादा भी है कल फिर ये उगेगा और इस अंधियारे को दूर कर देगा, और इस उम्मीद में ये रात कितनी भी गहरी हो बहुत आराम से बिताई जा सकती है, है ना !'' अजय को मानो एक आस दिखती है और वह भी घर की ओर चल देता है।

आखिर वह दिन आ ही गया, ग्रेजुएशन के रिजल्ट का दिन, कॉलेज में काफी भीड़ है, बोर्ड पर परिणामों के चिपकने का सभी को इंतजार है। अजय अपने विभाग के कार्यालय के

पास जाकर देखता है, फर्स्ट क्लास फर्स्ट... उसकी आंखे चमक उठती हैं। वह प्रियंका का परिणाम देखकर भी बहुत खुश हो जाता है, दोनों ही फर्स्ट क्लास में उत्तीर्ण हुए थे। वह प्रियंका को ढूंढने लगता है, तभी सामने से प्रियंका को आते देख वह भागकर उसके पास जाता है और उसका हाथ पकड़ उसे बधाई देता है। अजय की खुशी देख प्रियंका भी झूम उठती है। अजय का मन होता है की प्रियंका को एक बार गले लगा ले पर अपनी सीमाओं का उसे ज्ञात है और उसे प्रियंका के सम्मान की भी उतनी ही चिंता है। वह प्रियंका से कहता है, ''चलो इस खुशी को सेलिब्रेट करते हैं।'' प्रियंका भी हामी भरते हुए बाकी दोस्तों के साथ चल पड़ती है।

चाय की ट्रे और समोसों का साथ सभी दोस्तों की पार्टी शुरू हो जाती है। कैंटीन के एक कोने में प्रियंका और अजय। ''मैं तुमसे प्यार करता हूं प्रियंका!'' अजय प्रियंका की आंखों में देखकर धीरे से इज़हार कर देता है। प्रियंका कुछ सहम सी जाती है..। मैं तुम्हारी भावनाओं की कद्र करती हूं अजय, तुम बहुत अच्छे हो और कोई भी लड़की तुम्हें जीवनसाथी के रूप में पाकर बहुत खुश रहेगी....! फिर तुम क्यों नहीं?! अजय प्रियंका की बात पर अपने प्रस्ताव को और भी दृढ़ करते हुए कहता है। ''मैं  अपने निर्णय खुद नहीं लेती, तुम जानते हो और मेरे पिताजी ने मेरे लिए मेरा भविष्य तय कर लिया है..!'' प्रियंका की आंखें थोड़ी नम हो जाती हैं। वह अजय का हाथ अपने हाथों में लेकर कहती है.... ''माय विशेज टू यू अजय फॉर योर ब्राइट फ्यूचर!'' एक चौड़ी सी मुस्कुराहट लिए प्रियंका अजय की आंखों में देखती है और अपनी मजबूरी से वाकिफ करा कर चल देती है। अजय गहरी सांस लेते हुए प्रियंका को जाते हुए देखता है। तभी फोन का रिंग होते ही अजय अपने ख़यालों से बाहर आता है। होटल पहुंच गया था अजय, थका था अपनी यात्रा और अतीत की यात्रा से भी पर नींद मानों किसी और देश की यात्रा पर थी।

सुबह खिड़की से शहर का नज़ारा देखकर अजय उत्साह से भर जाता है, आज आखिर आज वह अपने पुराने दोस्तों से मिलने जा रहा था, और उस प्रेम से जो ना केवल अधूरा रहा बल्कि वक्त की परतों के नीचे दबा रह गया था।

शहर के सबसे मशहूर बैंक्वेट हॉल में सुबह दस बजे अजय पहुंच जाता है। हॉल अभी खाली है और अजय अपनी आदत के अनुसार समय से पहुंच जाता है। ''यार अजय! तू तो अब भी गबरू जवान है मेरे दोस्त!'' अजय अपने मोबाइल फोन से सर उठाकर सामने देखकर भागकर राहुल के गले लग जाता है। और इस तरह सारे दोस्त और सहेलियां इकट्ठा होना शुरू हो जाते हैं। अजय की निगाहें मानो एक के इंतजार में व्याकुल हैं, समय मानो सदी की तरह बीत रहा हो। तभी सामने दरवाज़े से प्रियंका आती दिखती है, हल्के ग्रे कलर की साड़ी में, थोड़ी सी, बिल्कुल हल्की सी भरी, बालों का जुड़ा बना हुआ, उम्र ने उसके व्यक्तिव को मानो और भी संजीदा कर दिया था, हालांकि उम्र की परत उतनी भी नहीं चढ़ी थी। उसकी इस सादगी पर ही अजय ने अपना मन कबका उसे सौंप दिया था। आज भी बिल्कुल वैसी ही है प्रियंका। ''अरे! अजय, हैलो,...किस दुनिया में हो?'' प्रियंका अजय की आंखों के सामने हाथ फेरकर पूछती है। अजय बरसों बाद फिर उसके ख़यालों से निकलता फिर उसी के सामने सकपका जाता है। ''कैसी हो प्रियंका?'' मुस्कुराते हुए अजय पूछता है। मैं बिल्कुल ठीक हूं, तुम कहो, कहां हो, क्या कर रहे हो? एक सांस में प्रियंका पूछ बैठती है। अजय हल्के से मुस्कुराकर बाकी दोस्तों के बीच बैठ जाता है, प्रियंका को वो सारे जवाब देगा मगर कुछ सोच कर थोड़ा समय ले लेता है। सारे दोस्त एकत्रित होते हैं। कुछ अब भी वैसे ही जिंदादिल और मज़ाकिया हैं। पूरा हॉल हंसी और ठहाकों से गूंज रहा है। गाने की धुन में कई दोस्त नाच रहे हैं, मानों वक्त से थोड़ा वक्त उधार लिया हो, जीवन की सारी जटिलता और स्ट्रेस से कुछ पल अपने लिए चुराकर सब पहले जैसे बन जाना चाहते थे। लंच के समय अजय प्रियंका से थोड़ा दूर बैठकर उसकी बेस्ट फ्रेंड समीरा के करीब बैठता है। फिर भी वह प्रियंका से निगाह नहीं हटा पाता। वह सोचता है, कॉलेज में भी बिंदी लगाकर आने वाली लड़की आज शादी के बाद बिल्कुल ऐसे कैसे आ गई। ना बिंदी, ना सिंदूर, इतनी आधुनिक हो गई क्या वह...! अगर मेरे साथ होती तो ऐसे नहीं रहने देता। ''और बताओ समीरा कौन–कौन है तुम्हारी फैमिली में?'' ''दो बच्चे और एक हसबैंड !'' कहकर समीरा जोर से हँस पड़ती है। ''समी तुम बिल्कुल नहीं बदली ...!'' अजय की बात सुन समीरा थोड़ी खामोश हो जाती है, अरे क्या हुआ, कुछ गलत कह दिया क्या मैंने? नहीं अजय मैं तो बस प्रियंका के लिए उदास हो गई! क्यूं! क्या हो गया?

अजय का दिल मानों बैठा जाता है। ''सब ठीक तो है उसकी जिंदगी में?'' ''तुम्हें नहीं पता क्या ?'' समीरा चकित होकर अजय से पूछती है। ''मुझे कैसे कुछ पता होगा, बहुत कम ही दोस्त ऐसे हैं जो संपर्क में रहते हैं, और प्रियंका ने कभी मेरे कॉल का जवाब नहीं दिया, मुझे लगा उसे शायद मेरा कॉल करना बुरा लगता है, इसलिए मैंने कभी फिर कोशिश नहीं की।'' गहरी सांस लेते हुए वह कहती है....''क्या बताती वह, शादी के दूसरे साल में ही उसके पति की कैंसर से मौत हो गई...ब्रेन कैंसर की अन्तिम स्टेज पर पता चला, प्रियंका ने दिन–रात एक कर दी पति की सेवा में और उसके पिता ने भी पूरी कोशिश की अच्छे से अच्छे हॉस्पिटल में अभिषेक का इलाज करवाने की पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी, अभिषेक के देहांत के बाद प्रियंका की सास भी चल बसी, परिवार में बस वो तीन ही थे।'' अजय का गला रूंध जाता है... ''अब किसके साथ रहती है वह?'' मन के सारे आवेगों को समेट कर अजय समीरा से पूछता है। ''इकलौती, लाडली बेटी थी प्रियंका, पर किस्मत ने इतना गहरा अकेलापन लिख दिया उसकी किस्मत में कि वह अब इसकी आदि हो गई। पिता की मृत्यु के बाद अब वह अपने घर में ही रहती है, एक एन.जी.ओ. के लिए काम करती है जो अनाथ बच्चों के जीवन को खुशहाल बनाने के लिए काम करता है, पता है अजय एक बार प्रियंका ने कहा था कि उसकी शादी पिता के आदेश से हुई थी, पर वो किसी और को चाहती थी और वह लड़का तब संघर्ष कर रहा था, चूंकि वह जानती थी की पिता उसे ऐसे किसी के साथ शादी नहीं करने देंगे जो संघर्षरत हो, इसलिए उसने अपने पिता की मर्ज़ी से शादी की।'' अजय के सीने में मानो पीड़ा का जल प्रवाह सारे बांध तोड़कर निकल आता है...! वह सहसा वहां से उठकर चला जाता है।

वाशरूम में जाकर अपने चेहरे पर पानी के छींटे देता रहता है जब तक आंखों से आंसू बहना बंद नहीं हो जाते। किसी तरह खुद को संभालते हुए वह बाहर हॉल में आता है। प्रियंका सभी से मुस्कुराते हुए और कभी–कभी खिलखिलाती हुई बातें करती दिखती है।

चकित होता हे, अजय, प्रियंका का धैर्य और संयम देखकर। सभी दोस्त समंदर किनारे जाने का प्लान करते हैं। बीच पर पहुंचकर सभी की खुशी दोगुनी हो जाती है। प्रियंका, अजय के साथ रेत पर बैठ जाती है, ''कैसे हो अजय?'' हल्की सी मुस्कान के साथ प्रियंका पूछती है। ''यह ठीक नहीं किया तुमने प्रियंका!'' अजय की आंखों में शिकायत और दिल में वेदना का बवंडर है। ''ये तो मेरा जवाब नहीं हुआ अजय, इतने सालों बाद मिले हैं वह भी कुछ पल के लिए, अब तो कोई शिकायत मत रखो मन में।'' प्रियंका रेत पर उँगली से आड़े–तिरछे निशान बनाती अजय से अपनी बात कहती है। ''मैंने तुम्हारा इंतजार किया था प्रियंका, मेरी शादी को बहुत ज्यादा दिन नहीं हुए, इतना कुछ हो गया तुम्हारे साथ एक बार मुझे बताना जरूरी नहीं समझा?''

अजय अपनी पीड़ा की नदी को आंखों के कोनों से बहने पर रोक नहीं पाता। मैं हर हाल में तुम्हें अपना लेता प्रियंका !

''समंदर की लहरों पर अपनी नज़र टिकाए अजय अपनी बातों को प्रियंका के सामने बिना रुके कहता रहता है। ''लहरें कितनी बेबाक हैं, कितनी स्वच्छंद, समंदर कितना विशाल है पर अपनी सीमा फिर भी जानता है क्योंकि समंदर अपनी सीमा भूलता है तो सिर्फ सुनामी होती है... है ना अजय?'' ''सही कह रही हो प्रियंका, हमेशा सीमाओं ने बांध दिया है हमारे जज़्बातों को किसी अनजानी सुनामी के डर से।'' अजय प्रियंका की बात का जवाब देते हुए कहता है। डूबते सूरज को दोनों निहारते हैं, और दोनों धीमें कदमों से लहरों के समानानतर पर चलने लगते हैं। बरसों बाद फिर वही शाम है और वही दोनों इंसान पर सब कितना बदल गया। अजय आज भी वह शाम नहीं भूला जब प्रियंका ने कहा था ''देखो, यह सूरज जो डूब रहा है ना उसके साथ एक वादा भी है कल फिर ये उगेगा और इस अंधियारे को दूर कर देगा, और इस उम्मीद में ये रात कितनी भी गहरी हो बहुत आराम से बिताई जा सकती है, है ना !'' अजय नहीं जानता अब गहरी रातों को आराम से बिता पाएगा या नहीं पर उस लम्हें का सच यही है कि दो इंसान समंदर किनारे चल रहे हैं और शाम ढल रही है...! ◆

**पता : लाचित चौक, सेन्ट्रल जेल के निकट,**
**डाक–तेजपुर, शोणितपुर, असम–784001**
**मो. : 9435631938**

# रीतादास राम की दो कविताएँ

डॉ. रीतादास राम

## 1–आज की गति का अवलोकन

शब्द, भद्द, टूट से
परिचित हो रहा है साहित्य

भ्रमित है सद्–मार्ग
जिसे उद्देश्य की परवाह थी

बिखरते मूल्य
साजिश के तहत चलती रणनीति का शिकार है

कठिन दौर की वैचारिक चिंता सबके हिस्से का खौलता सच है

गद्य पद्य वैचारिक चेतना के मध्य
जीवित रहने की पुरज़ोर सार्थक प्रयास का गड्डमड्ड प्रमाण है

मर्म को ढूँढना
बिना बीज के वृक्ष की अज्ञात तलाश ही सही

कहना है, करना विरोध
फिर भी चुप्पी की अतिरिक्त इच्छा समय की माँग है

शब्दों से आता ताप समय की तस्वीर का संदर्भ है

भटकाव से आजादी का अपना चुनाव अभिव्यक्ति को कठघरे की सजा है
सजा है कहना, देखना, समझना, करना गौर, अमल में लाना

तर्क फिर भी तर्क है अच्छे बहस में शामिल होने का हक खोते हुए
उम्मीद है आज की गति का अवलोकन वृद्ध होती दृष्टि नहीं।

## 2–हाशिए में पड़े खेत

हाशिए बनाए गए बनते गए बने रहे
हाशिए में किया गया तमाम अनदेखा अनचिन्हा

उसे भी जिसे नहीं देखा जाना चाहिए था, तय किया गया
तय की सारी नई आज़ादी, उसकी संगत, मिठास और झूठ के साथ

उँगलियों को कुतर कर हाथों को तराशा गया
सपनों को इकट्ठा कर छोड़ दिया गया हाशिए पर

हाशिए में गुम होता गया नया बनता आदमी
विकास संस्कृति और संस्कारों के मायने गुम होते गए

हाशिए की छोटी सी भूमि का विस्तार होने लगा
सीमा रेखा की ज्यामितीय चेतना का सजग बिंदु

हाशिए ने बदली हाशिए की परिभाषा, बोल, खनक, उदासी और उमस
मति भ्रम उद्वेग बहस चर्चा की परवाह न करते हुए

हाशिए में जमा होती भीड़ ने हाशिए की रेखाएं बदली घटाया बढ़ाया
मुख्य धारा की हवा ने हाशिए को हटाया निपटाया अनदेखा किया

पसंद नहीं आने वाली चीजें नष्ट करने हेतु कर दी गई हाशिए पर

तमाम उम्र हाशिए में खड़ी जिंदगी बेदखल होना देखती रही

हाशिए में कर दी गई आँखें नज़रें दृष्टि दृष्टिकोण
उनसे बनते उद्देश्य, मूल्य, जीवन, अच्छाई, नियत, मानक सब कर दिए गए हाशिए के सुपुर्द

हाशिए में हवा पानी के साथ बसने लगी मिट्टी
हाशिए ने बोलना सीखा रहना शुरू किया

हाशिए पर बने सोच तर्क गहराई वाले पहाड़ों के गीले खेत
जिसकी मिट्टी को बरसों पहले न उपजाने की सज़ा मिली थी

बंजर होने की नियति तय की बने बनाए मौसम ने
पूरी रणनीति के तहत समाज का हिस्सा मुख्य धारा की गरिमा के बाजू पड़ा था

जिन्हें नहीं आया अपने लिए लड़ना वो अपने–आप हाशिए में समाते चले गए।

◆

पता : 34/603, एच.पी. नगर पूर्व, वासीनाका, चेंबूर, मुंबई–400074
मो. : 09619209272

# जीवन एक बहती धारा

❑ जसविन्दर कौर बिन्द्रा

लगातार साहित्य लेखन से जुड़ी सुधा ओम ढींगरा अपने नवीन कहानी संग्रह श्चलो फिर से शुरू करेंश के साथ पाठकों के सम्मुख उपस्थित हुई हैं। लंबे समय से प्रवास में रहने के कारण सुधा जी के साहित्य में प्रवासी भारतीयों को मुखर रूप से देखा जा सकता है। उनसे जुड़े पारिवारिक रिश्तों व अन्य समस्याओं को कहानी के केंद्र में रखकर, भारत व प्रवासी संदर्भों के बीच पुल का काम भी करती है और पाठकों को वहाँ के परिवेश से परिचित भी करवाती है, जिनकी जानकारी हमें यहाँ बैठे नहीं होती। सामान्यतः भारतीयों को लगता है कि विदेशों और विशेषकर अमरीका में बसने वालों को भला कोई तकलीफ या परेशानी कैसे हो सकती है!

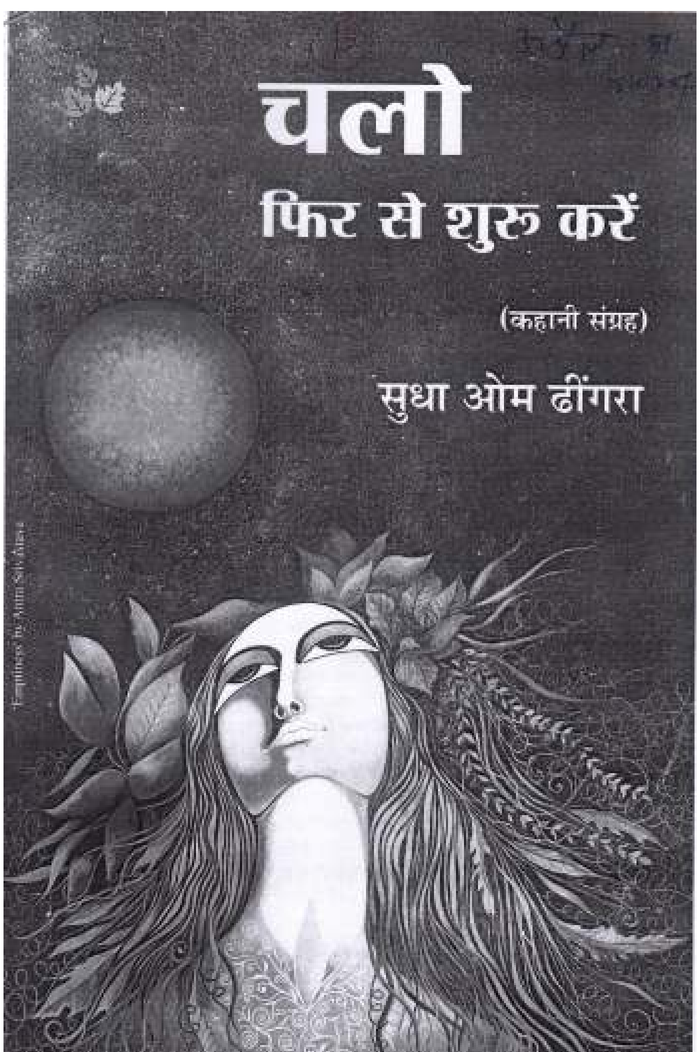


'वे अजनबी और गाड़ी का सफर' कहानी हमें एक ऐसे विषय से अवगत करवाती है, जिसे अक्सर फिल्मों व अंतर्राष्ट्रीय सीरियलों में देखा जाता है। दो भारतीय पत्रकार युवतियों ने एक चीनी युवती को यूरोपीय पुरुष के साथ रेलगाड़ी में जाते देखा परन्तु वह लड़की बहुत तकलीफ में प्रतीत हो रही थी। उन दोनों युवतियों ने किस होशियारी व सर्तकता से उस लड़की को ड्रग माफिया से मुक्त करवाया, वह कहानी पढ़ने से ही पता लगता है। इस कहानी को केवल 'एक्साइटि' करने या आज के दौर की सनसनीखेज़ घटना के तौर पर नहीं देखा जा सकता, क्योंकि वास्तव में यह कहानी हमें अपने और अमरीकी तंत्र व पत्रकारिता के बीच के अंतर को दर्शाती है। वहाँ एक युवती पत्रकार के एक

मैसेज पर सिक्योरिटी ऑफिसर्स द्वारा 'हयूमन ड्रग बॉम्ब' के तहत उठायी जा रही उस चीनी लड़की को उस पूरे गैंग से मुक्त करवा लिया गया।

रेलगाड़ी अपनी गति से चलती रही, यात्री अपने–आप में व्यस्त बैठे रहे और एकदम सावधानी और सर्तकता से बिना कोई शोरगुल मचाए, हाय–तौबा किए, लड़की को बचा लिया गया, मैसेज करने वाली लड़की की तारीफ भी कर दी गई। यहाँ तक कि उसके अखबार के मुख्य संपादक को उसका प्रशंसात्मक पत्र तक भिजवा दिया गया। भारत में हमने ऐसा कभी होते देखा है, इतनी सजगता, इतनी सर्तकता, बिना देर किए कदम उठा लेना...! वास्तव में ऐसी बातें यूरोपीय व अमरीकियों से सीखनी वाली हैं, गारंटी है, जो हम कभी नहीं सीख पाएँगे।

अंधविश्वास केवल एशिया व भारत में ही सर्वोपरि नहीं, बाहर के देश भी इसके प्रभाव से मुक्त नहीं। वहाँ भी ग्रामीण क्षेत्र हमारे समान ही पिछड़े हुए, कई प्रकार के दुरावों व पाप–पुण्य के बीच उलझे हुए हैं। इसी कारण जब अगाध सुंदरी डयू स्मिथ ने गौरव मुखी को अपने जीवन के काले अतीत के बारे में बताया तो एक बार वह यकीन न कर पाया। उसे यह जानकर अत्यन्त हैरानी हुई कि डयू के साथ भी ऐसा ही कुछ हुआ, जैसाकि किसी भी सुंदर लड़की को जवान होने पर बुरी नीयत और दुश्कर्म से गुज़रना पड़ सकता है परन्तु माँ–बाप ने अपने धर्माधिकारी के चरित्र पर संदेह न किए जाने के अपने रूढ़िवादी और अंधविश्वासी व्यवहार को निभाया। जबकि डयू उस दुश्कर्म के कारण एच आई वी वायरस की लपेट में आ गयी। अपनी मेहनत व योग्यता के बल पर वह एक बड़ी कंपनी में उच्च पद पर पहुँच गयी, उसके पास सब कुछ था परन्तु उसकी सुंदर नीली आँखें उदास बेनूर थी, जिसके पीछे का रहस्य आज गौरव को समझ में आया था। इसलिए डयू उससे शादी नहीं करना चाहती थी क्योंकि वास्तविक जीवन में ऐसा करना संभव नहीं था। इस बीमारी का इलाज सारी उम्र करना पड़ता है। बाहर के देशों में ऐसी बीमारी के मरीज़ ज़्यादा हैं परन्तु इसके बाद भी वे जीवन में आगे बढ़ते हैं, समाज उन्हें उस प्रकार से नहीं दुत्कारता, जिस प्रकार का व्यवहार हमारे यहाँ परिवार व समाज द्वारा किया जाता है।

'वह ज़िन्दा है...' कहानी हस्पताल की उस वास्तविकता को दर्शाती है, जिसमें अल्ट्रासाउंड करने वाली नर्स कीमर्ली ने जब एकदम सपाट तरीके से गर्भवती कविता से कह दिया कि 'मिसेज़ सिंह युअर बेबी इज़ डेड।' ऐसा सुनते ही कविता के शरीर की गति वहीं रुक गई। फिर जो हुआ, वह बहुत ही दर्दनाक था। कविता के शरीर के गतिहीन हो जाने से मृत बच्चे को बहुत मुश्किल से उसके शरीर से बाहर निकाला गया। कविता की केवल साँसें से चल रही हैं जबकि वह अपना मानसिक संतुलन खो चुकी है क्योंकि दो बार गर्भपात हो जाने के बाद यह तीसरा मौका ही उसे माँ बना सकता था परन्तु नर्स द्वारा बिना किसी भावनात्मक अंदाज़ के, प्यार या फुसला कर कहने की बजाय सच को पत्थर की तरह उसके दिल पर दे मारा। जिसे कमज़ोर कविता सहन नहीं कर पायी। पति के कार को पार्क करके वापस आने तक के कुछ मिनटों में ही उस दंपत्ति की ज़िदगी उजड़ गयी। अब पति हस्पताल के मैनेजमेंट से मानवता की लड़ाई लड़ रहा है। उसका तर्क बस इतना ही है कि 'वह सच बोलने के खिलाफ नहीं पर सच को बोला कैसे जाए!' यह बात विदेशियों को हमसे सीखने की आवश्यकता है। कई बार भावनात्मक स्तर को सँभालने के लिए झूठ का सहारा भी लिया जा सकता है या उसे टाला जा सकता है। वास्तव में लेखिका दो भिन्न परिवेशों व परिस्थितियों को उनके

**रेलगाड़ी अपनी गति से चलती रही, यात्री अपने–आप में व्यस्त बैठे रहे और एकदम सावधानी और सर्तकता से बिना कोई शोरगुल मचाए, हाय–तौबा किए, लड़की को बचा लिया गया, मैसेज करने वाली लड़की की तारीफ भी कर दी गई। यहाँ तक कि उसके अखबार के मुख्य संपादक को उसका प्रशंसात्मक पत्र तक भिजवा दिया गया। भारत में हमने ऐसा कभी होते देखा है, इतनी सजगता, इतनी सर्तकता, बिना देर किए कदम उठा लेना...! वास्तव में ऐसी बातें यूरोपीय व अमरीकियों से सीखनी वाली हैं, गारंटी है, जो हम कभी नहीं सीख पाएँगे।**

दृष्टिकोणों द्वारा अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत करती है। इसे तुलना न भी कहा जाए तब भी लगता है, अच्छी बात, अच्छी सलाह जहाँ से भी मिले, उसे सीख लेने में कोई बुराई नहीं। इससे आगे बढ़ने में मदद मिलती है।

'भूल–भुलैया' भी कुछ इसी प्रकार के अंतर को बयान करती है। भारतीयों के वट्सएप ग्रुपों में लगातार इस प्रकार संदेश आ रहे थे कि एशियाई लोगों को अकेले–दुकेले देख कर, अगवा कर लिया जाता है और उन्हें मॉल्स के बड़े ट्रकों में उठा ले जाकर, उनके मानवीय अंग निकाल लिए जाते है। इन संदेशों से घबरायी सुरभि ने जॉगिग करते हुए एक पार्क में उसका पीछा करते एक पुरुष–स्त्री को उसी गैंग का समझ लिया और अपने बचाव के लिए पुलिस को फ़ोन कर दिया। पुलिस ने आकर उसकी गलतफहमी दूर की कि ये सारी अफवाहें है और वे स्त्री–पुरुष उसकी सहायता के लिए उसके साथ–साथ आ रहे थे। जिस घटना के कारण ऐसी अफवाहें फैलने लगी, वह एक गलती के कारण घटी और तभी खत्म भी हो गई परन्तु उस एशियन महिला ने बात का बतंगड़ बना कर, अटेंशन लेने के लिए कुछ का कुछ बना दिया। यह कहानी केवल विदेशों में ही नहीं, कहीं भी रहते हुए ऐसे फैलने वाले और फॉरवर्ड किए जाने वाले संदेशों से सतर्क करती है। जिस डिज़ीटल मीडिया की सुख–सुविधा ने हमारा जीवन आसान किया है, उस पर बढ़ती निर्भरता हमें बेआराम करने में कोई कसर नहीं छोड़ रही।

**'इस पार से उस पार' में सांची को ऐसा कुछ का एहसास अपने बचपन से ही होने लगा। उसने जब अपने परिवार व गली–मुहल्ले में एक–दो घटनाओं के बारे में घटने से पहले ही बता दिया परन्तु उसके परिवार वालों ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। बल्कि उसकी इस अनुभूति को हमेशा के लिए दबा देने की कोशिश की। बरसों बाद उसने फिर एक बार अपनी सखी अनुघा को फलां समय पर सड़क पार करने से चेतावनी देकर उसे बचा लिया।**

भावनात्मक स्तर की बात करें तो संग्रह की बहुत सारी कहानियों में इसे प्रमुखता से देखा जा सकता है, जिसमें भारतीय पारिवारिक मूल्यों की अधिकता समायी हुई है।

'कभी देर नहीं होती' में ददिहाल के लाडले नंदी को माँ और ननिहाल के प्रभाव में आनंद में बदलना पड़ा। ननिहाल की चालाकी और तेज़–तर्रार भरे व्यवहार के कारण आनंद और उसके छोटे भाई को बचपन से ही दादा–दादी के प्यार व ममत्व भरे माहौल से दूर होना पड़ा। सब कुछ समझने के बावजूद उसके पापा ने मम्मी और ननिहाल के आगे चुप्पी साध ली ताकि बच्चों की परवरिश पर कोई बुरा असर न पड़े। जब इतने वर्षों के बाद अमरीका के एक शहर में रहते हुए उसकी बुआ ने 'नंदी' कह कर पुकारा, तो वह इतने वर्षों के लंबे अंतराल के बाद उसी माहौल व अपनेपन से भर उठा। अंग्रेज़ी के दो शब्द हैं, जो संबंधों के लिए प्रयोग किए जाते हैं 'कनेक्ट' होना और 'रिलेशन' होना। परन्तु हम जानते हैं कि हर शब्द का अपना लहज़ा, टोन व संदर्भ तो होता ही है, उसकी अनुभूति भी अलग होती है। यहाँ कनेक्शन से अर्थ, संस्कारों से, भावनाओं से, अपने मूल से जुड़ा होना है, जिसमें वर्षों की दूरी भी कोई अर्थ नहीं रखती जबकि दूसरी ओर रिलेशनशिप में संबंध तब तक रहेगा, जब तक आप चाहें...! इसलिए रिश्तों में कनेक्शन होना चाहिए, रिलेशनशिप तो आती–जाती चीज़ है।

ऐसा ही कुछ 'चलो फिर से शुरू करें' शीर्षक कहानी में भी देखा जा सकता है। विदेशी महिला से विवाह कर पुत्र माँ–बाप से अलग हो गया। माँ–बाप ने भी उसकी गृहस्थी में दख़ल देना ठीक न समझ, उससे दूरी बनाना उचित समझा। परन्तु जब उन्हें किसी परिचित द्वारा मालूम हुआ कि मार्था, कुशल को तलाक देकर, बच्चों को उसके पास छोड़ कर चली गई। इतना ही नहीं, वह उसके नाम पर तीन मिलियन का कर्ज़ ले, अपनी माँ के साथ चली गयी। यदि कुशल श्वेत अमेरिकन होता तो मार्था बच्चे साथ ले जाती परन्तु भारतीय अमेरिकन पिता के बच्चों को वह कभी स्वीकार नहीं करेगी। ऐसी मुश्किल स्थिति में कुशल को भुला दिए गए माँ–बाप ही याद आए क्योंकि उसे मालूम था कि उसके माँ–बाप ने उसे कभी भुलाया नहीं होगा। इसलिए उसने अपने पिता को फ़ोन किया और उनके पास अपने बच्चों को छोड़ कर, जीवन में एक नयी शुरूआत करने का संकल्प लिया।

कॉलेज जीवन में ऐसे कई मित्र मिलते हैं, जिनसे सारी उम्र का नाता बन जाता है और कई बार ऐसी कुछ घटनाएँ भी घट जाती हैं, जिसकी कड़वाहट जीवन में घुल कर, परिवार को भी बदनाम कर देती है। 'कँटीली झाड़ी' में डिप्टी कमिश्नर की बेटी होने के घमंड में खोयी अनुभा ने कॉलेज में अपना रौब बनाए रखा। परन्तु जब उससे अधिक योग्य और सुंदर नेहा पर उसका यह रौब न चला तो उसने नेहा को बदनाम करने की कोशिश की। यहाँ तक कि शादी के बाद किसी परिचित के घर पर मिलने पर, अनुभा ने फिर से नेहा के ड्राईवर के साथ घर से भाग जाने की बात फैला कर, ससुराल में उसकी बदनामी करनी चाही। तब नेहा ने सभी को उसकी सारी सच्चाई से अवगत करवाया कि यह उसी के साथ घटा था। नेहा को समझ आ गया कि कुछ लोग इतने विषैले व कांटों भरे होते हैं कि उनसे न केवल बच कर रहना चाहिए बल्कि उन्हें उनकी औकात भी बता देनी चाहिए ताकि उनके खतरनाक कारनामों पर लगाम लग सके। इसी प्रकार कई बार पूजा व दीपक जैसे मित्र भी होते है, जिनकी शुरूआत लड़ाई से हुई हो परन्तु एक–दूसरे के संपर्क में आने और गलतफहमी दूर होने से दोनों ही एक–दूसरे के मददगार साबित हुए। परन्तु जीवन के लंबे समय में मित्र खो भी जाते हैं, फिर ऐसी स्थिति आ जाती है, जब 'कल हम कहाँ तुम कहाँ'। कोई कहीं भी रहें, मीठी याद बन कर अवश्य दिल में समाए रहते हैं। मन क्या है, इसका चेतन/अवचेतन उसे कहाँ से कहाँ पहुँचा सकता है। सदियों से इसे जानने–समझने की कोशिश धर्मग्रंथों, शास्त्रों व फिलॉसफी द्वारा की जा रही है। कई बार निकट के संबंधों को व्यक्ति सारी उम्र समझ नहीं पाता और कई बार दूर–देश में बैठे अपने बच्चों की दुःख–तकलीफ को माँ–बाप अपने घर में बैठे महसूस कर, तड़पने लगते हैं। कई लोग, अपनों के अलावा दूसरों के दुःख–दर्द या किसी आने वाले अनिष्ट को भांप लेते हैं। यह सब अबूझ पहेली समान है, जिसकी थाह पाना संभव नहीं, उस व्यक्ति के लिए भी नहीं, जिसे कुछ अप्रिय घटने का अंदेशा होने लगता है। माना जाता है कि सारा ब्रह्मांड एक–दूसरे से जुड़ा हुआ है, इससे बाहर कुछ भी नहीं। इसलिए प्रकृति में कुछ भी घटने का भास, विशेषकर अप्रिय व दुखद घटने का एहसास संसार के कुछ जीवों को होने लगता है। कुछेक मनुष्यों को ऐसी अनुभूतियों का होना उनके अपने बूते की बात नहीं होती मगर कभी–कभार ऐसा होता है। ऐसी अनुभूतियों को लेकर दो कहानियाँ इस संग्रह में शामिल है। 'इस पार से उस पार' में सांची को ऐसा कुछ का एहसास अपने बचपन से ही होने लगा। उसने जब अपने परिवार व गली–मुहल्ले में एक–दो घटनाओं के बारे में घटने से पहले ही बता दिया परन्तु उसके परिवार वालों ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। बल्कि उसकी इस अनुभूति को हमेशा के लिए दबा देने की कोशिश की। बरसों बाद उसने फिर एक बार अपनी सखी अनुघा को फलां समय पर सड़क पार करने से चेतावनी देकर उसे बचा लिया।

'अबूझ पहेली' नामक कहानी की मुक्ता धीर को 9/11 के हवाई जहाज़ हादसे के दृश्य कुछ दिन पहले से ही नज़र आने लगे थे। उसे बार–बार दिखायी दे रहे इस दृश्य की समझ नहीं आ रही थी। परन्तु उसका तन–मन उदास, क्लांत और निर्जीव महसूस कर रहा था। अपने पति व बेटे को बता देने के बावजूद, उसे स्वयं पर भी यकीन हो रहा था। परन्तु वर्ल्ड ट्रेड सेंटर का हादसा सच में घट गया, उसके पति व बेटे को उसकी बात पर यकीन आ गया। परन्तु इतने बरसों बाद भी मुक्ता स्वयं इस पहेली को बूझ नहीं पायी कि उसे वे दृश्य कुछ दिन पहले कैसे दिखायी देने लगे थे। वास्तव में मनुष्य विज्ञान, मेडिकल, अंतरिक्ष व तकनीकी स्तर पर कितनी भी प्रगति कर लें, प्रकृति और मन के बहुत सारे रहस्यों को समझ पाना अभी भी उसके वश की बात नहीं है।

सुधा ओम ढींगरा की सारी ही कहानियाँ उसके शीर्षक 'चलो फिर से शुरू करें' को ही सार्थक करती है। मानवीय जीवन उतार–चढ़ाव का ही नाम है। इसमें हिम्मत रखकर, डट कर चलने वाले ही जीवन की बहती धारा को पार सकते हैं। ◆

**पता : आर–142, प्रथम मंज़िल,**
**ग्रेटर कैलाश–1, नई दिल्ली– 110048**
**मो. : 9868182835**

# प्रीति गुप्ता की दो कविताएँ

## छल

ये पेड़ ये पौधे ये चाँद सितारे
ये अलमस्त चंचल हवाएँ
पूछो इनसे आज क्यों
मदहोश हैं नज़ारें,
कौन कर गया कानों में
चुपके से सरगोशी,
कौन भर गया दिल में
एक नयी कहानी,
किसने दी आवाज फिरसे
किसने की शरारत,
क्यों मन के तार कोई
चुरा ले गया,
खींचकर अरमानों को
सपने दिखा गया,
हर पल हर ख़्याल में वो
क्यों आ रहा,
दिल कहीं लगता नहीं
वो क्या कर गया,
सुकून सारे जहाँ का वो
क्यों उड़ा ले गया,
छल कर मुझसे ही वो
मुझको क्यों ले गया।

## क़द

कितना अच्छा लगता है
अपने–आप को
जब मालूम होता है कि
अचानक एक साथ
इतनी सारी तमन्नाओं ने
जन्म ले लिया,
अथाह प्यार का सागर
आप पर उमड़ने लगा
किसी की प्रेरणा हो आप
किसी की कल्पना हो आप
किसी की आवाज़ हो आप
किसी की कविता हो आप
किसी का ख़्याल हो आप
किसी का गुमान हो आप
किसी की धड़कन हो आप
किसी का गुरूर हो आप
किसी की ज़ुबान हो आप
किसी का एहसास हो आप
किसी का ख़्वाब हो आप
किसी का विश्वास हो आप
कोई अपना बनाना चाहता है
कोई तस्वीर में क़ैद करना चाहता है
कोई पूजना चाहता है
कोई साथ चाहता है
किसी की ख्वाहिश हूँ मैं
किसी की चाहत हूँ मैं
किसी की ज़िंदगी हूँ मैं
किसी की बंदगी हूँ मैं
और क्या लिखूँ
कैसे लिखूँ
कितना लिखूँ
इतनी हदें
कैसे मैं इतनी विशाल हो गई
लोगों ने मुझे
आकाश बना दिया
एक छोटे से क़द को कितना
महान बना दिया।

◆

पता : ए–501, प्लूमेरिया, विभूतिखण्ड,
गोमती नगर, लखनऊ
मो. : 9565181329

भारत सरकार के रजिस्ट्रार आफ न्यूज पेपर्स की रजिस्ट्री संख्या 33122/78
भारतीय डाक विभाग की डाक पंजीयन संख्या–एल.डब्लू./एन.पी. 432/2006

# सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

## प्रमुख प्रकाशन

| | | |
|---|---|---|
| **उत्तर प्रदेश मासिक** | : | समकालीन साहित्य, संस्कृति, कला और विचार की मासिक पत्रिका समूल्य उपलब्ध एक अंक रु. 15/– मात्र, वार्षिक मूल्य रु. 180/– मात्र। |
| **नया दौर (उर्दू)** | : | सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विषय की एक उर्दू मासिक पत्रिका, एक अंक रु. 15/– मात्र, वार्षिक मूल्य रु. 180/– मात्र। |
| **वार्षिकी** (हिन्दी/अंग्रेजी) | : | उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के विस्तृत आंकड़ों एवं सूचनाओं का वार्षिक विवरण मूल्य रु. 325/– मात्र। |

## महत्वपूर्ण प्रकाशनों के लिए सम्पर्क करें

**सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र.**
**दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ**
**उत्तर प्रदेश के समस्त जिला सूचना कार्यालय**

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. स्वत्वाधिकारी के लिए शिशिर, निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ द्वारा प्रकाशित तथा प्रकाश पैकेजर्स, लखनऊ में मुद्रित